चन्दामामा
फरवरी १९९४

Parle-G
स्टंप उड़े तो क्या बोले? खेल की सच्ची शक्ति है जी
पारले-जी
स्वाद भरे, शक्ति भरे.
भारत के सबसे ज्यादा बिकनेवाले बिस्किट.
everest/93/PP/173-hn

भारत में सर्वाधिक बिकने वाले कॉमिक्स
डायमण्ड कॉमिक्स
अग्निपुत्र अभय का नवीनतम कॉमिक
अग्निपुत्र अभय और 'शैतान तिकड़ी
64 पेज मूल्य 8/-
अग्निपुत्र अभय और 'शैतान तिकड़ी
मुफ्त! रिवॉलविंग इण्डिया
रमन और साड़ी
फौलादी सिंह और महापात्रा
राजन इकबाल और आजादी के दुश्मन
पलटू और जादुई तालाब
चाचा भतीजा और जादूगर पाताल फोड़

चन्दामामा

संस्थापक : 'चक्रपाणी'

संचालक : नागिरेड्डी

विश्व भ्रातृत्व

गांधीजी ने गुजरात विधापीठ की स्थापना की । स्थापना के चार वर्ष बाद १९२४ में वहाँ के विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए उन्होने कहा "हिन्दू, मुस्लिम, ईसाई, पारसी, तथा महूदी भाई-भाई बनकर रहें । उनके पारस्परिक व्यवहार समान स्तर पर हों । विश्वभ्रातृत्व तथा बंधुत्व में केवल विश्वास का होना पर्याप्त नहीं है । इस विश्वास को वे अमल में भी लायें । उन्होने बड़ी ही गंभीरता से उनसे स्पष्ट बताया कि अगर इस सिद्धांत में वे विश्वास नहीं रखते हों, या इसे अमल में लाने में सकुचा रहे हों तो ऐसे विद्यार्थियों को इस संस्था में कदापि स्थान नहीं है ।"

गांधीजी 'यंग इंडिया' के संपादक रहे । उन्होने इन भावनाओं को अपनी पत्रिका के द्वारा भी बारंबार व्यक्त किया और इनपर ज़ोर दिया । उन्होने स्पष्ट बताया कि युवक-युवतियों को प्रांत, नगर, जाति तथा भाषा के बंधनों में बंधना नहीं चाहिये; अपने को इन्हीं सीमाओं में सीमित नहीं रखना चाहिये । अपने भाषणों में अपने देशवसियों से वे सदा कहते रहे कि वे मानवता तथा समनता का व्यापक दृष्टिकोण अपनाएँ; संकुचित भावनाओं से अपने को ऊपर उठायें ।

इस व्यापक दृष्टिकोण को अपनाने में शिक्षा का बड़ा महत्व है । आदि शंकर ने कहा "हर किसी से संबंध जोड़ने में शिक्षा का अपूर्व स्थान है ।" संक्षेप में वह सबको मिलानेवाली कड़ी है । दुर्भाग्यवश वर्तमान शिक्षा केवल बाह्य है, आंतरिक नहीं और शाश्वत भी नहीं है । शिक्षा के द्वारा विद्यार्थी को अपने आप को उच्च तथा उत्तम बनाने का मार्ग ढूँढ़ना है । विचारों की परिपक्वता, परिपूर्णता, व्यवहार, कार्य, अभिव्यक्ति आदि सच्ची शिक्षा की प्राप्ति में बहुत ही सहायक होंगें । शिक्षा का उद्देश्य है, मनुष्य में परिपूर्णता की सृष्टि ।

वर्ष : ४७ | फरवरी १९९४ | अंक : ६

एक प्रति : रु. ४/- | वार्षिक चन्दा : रु. ४८/-

अध्यक्ष का वचन
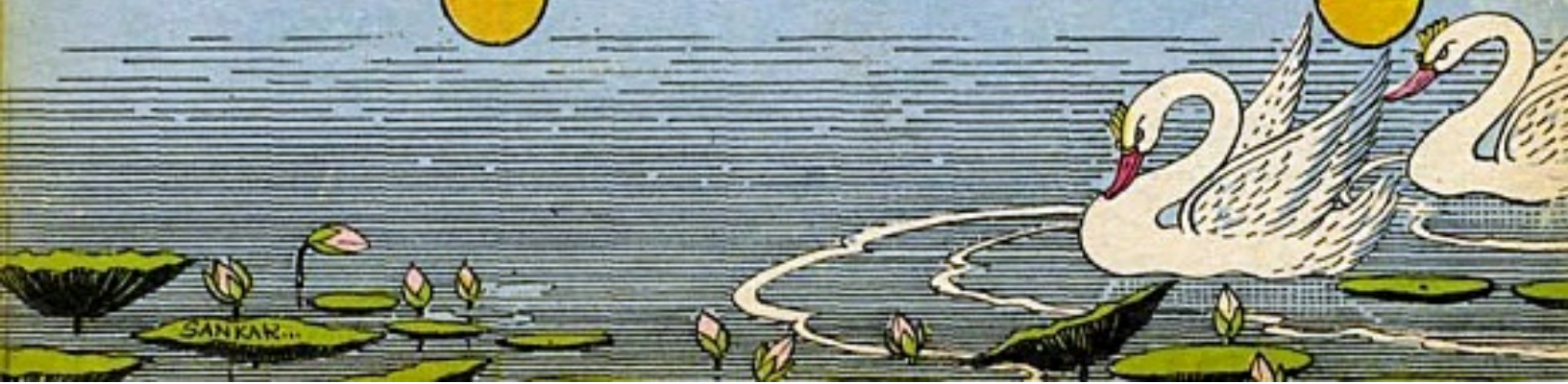
मामूल अब्दुल गयूम हमारे देश के निकट मित्रों में से हैं। ये नवंबर ११ को मालद्वीप के सर्वसम्मति से अध्यक्ष चुने गये हैं। चौथी बार वे अध्यक्ष चुने गये हैं। संसद ने (स्टेट मज़्लिस) केवल उन्ही का नाम इस पद के लिए प्रस्तावित किया था, जिसकी वजह से किसी प्रकार का कोई विशेष चुनाव इसके लिए संपन्न नहीं हुआ। हाँ, केवल इस संबंध में जनता का अभिप्राय जाना गया। अक्टोबर १ को ९३ प्रतिशत जनता ने संसाद के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया।

जनता के अभिप्रायों को जानने के पहले समझा गया था कि गयूम इस पद के लिए नहीं लड़ेंगे। इलियास इब्राहीम गयूम का आँतरिक सलाहकार था। उनका साला भी हैं। उन्होने संसद द्वारा इस पद के लिए अपने नाम को प्रस्तावित करने की भरसक कोशिश की। परंतु उनपर कुछ अभियोग आये और वे प्रमाण्ति भी हुए। जिसकी वजह से पंद्रह सालों के लिए वे देश सें बहिष्कृत हुए। इसलिए गयूम से अधिक योग्य व्यक्ति अध्यक्ष-पद के लिए देश भर में नहीं रहा।

चुनाव के पहले गयूम ने अपने देश की जनता को अनेकों वचन दिये। उन्होने वचन दिया कि देश के संविधान को एक निश्चित रूप दूँगा, अधिकार का विकेंद्रीकरण करूँगा, चुनाव की पद्धतियों में सुधार ले आऊँगा। उन्होने कहा कि देश में राजनैतिक दलों को अनुमति दी जायेगी, उनके उम्मीदवार भी अध्यक्ष के पद के लिए लड़ पायेंगे। विशेषतया, युवक-युवतियों को विशेष प्रधानता दी जायेगी। युवजनों में नशीली दवाओं के उपयोग का उन्होने तीव्र खंडन किया। उन्होंने कहा, मुख्यतया पिछले तीन सालों से १५-१७ वर्षें के युवक-युवतियों मे नशीली चीज़ों के उपयोग की मात्रा बढ़ती जा रही है। गयूम ने ऐसे युवजनों से अपील की कि वे इन नशीली चीज़ों के उपयोग से अपने को बचावें, उनसे दूर रहें और स्वस्थ रहकर अपने देश के विकास में योगदान दें। इस गंभीर समस्या को हल करने का भार उन्होने रशीदा यूसफ नामक एक महिला को सौंपा।

संसार के छोटे-छोटे स्वतंत्र देशों में मालद्वीप भी एक गणतंत्र राज्य है। क़रीब-क़रीब यह १३० व. कि तक व्याप्त है। यह देश १२०० द्वीपों का समुदाय है। २०० द्वीपों में ही जनता बसती है। कोई भी द्वीप १३ व. कि. मीटर से अधिक विशाल नहीं है।

मालद्वीपों का प्राचीन इतिहास स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं है। बताया जाता है कि ईसा के पूर्व चौथी शताब्दी
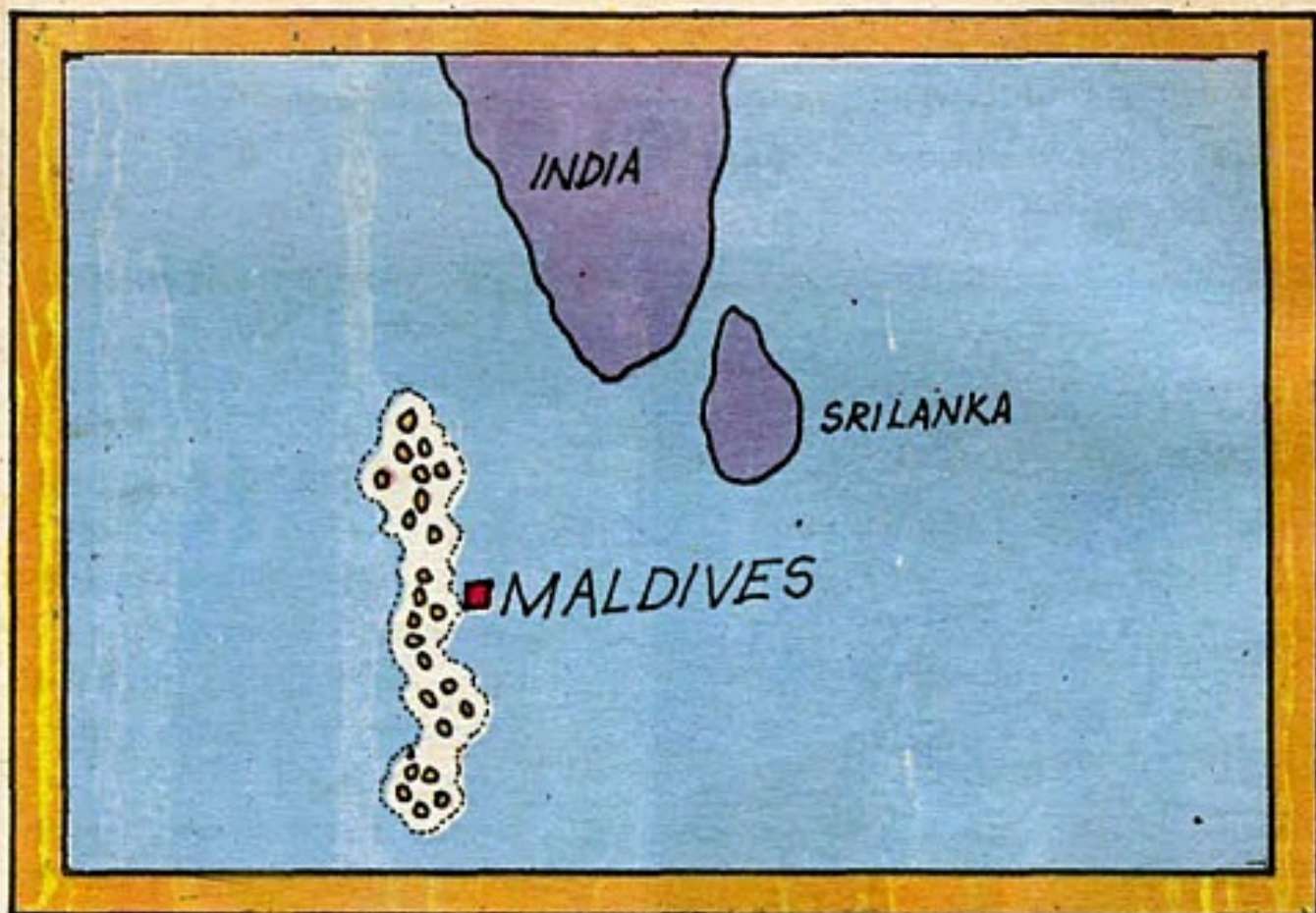
में दक्षिण भारत से द्रविड़ पहले-पहले वहाँ गये । इसके बाद उत्तर भारत से कुछ लोग वहाँ आये और बस गये । अलावा इनके, श्रीलंका से भी कुछ लोग वहाँ आकर रहने लगे । उनके साथ-साथ बौद्ध-धर्म ने भी यहाँ प्रवेश किया । बारहवीं शताब्दी में वहाँ के राजा ने इस्लाम मज़हब को अपनाया और वहाँ की जनता को भी आदेश दिया कि वे उसी मज़हब को अपनाएँ । इसके बाद उस द्वीप में कहीं-कहीं मसज़िदों का भी निर्माण हुआ ।

१८८७ में ये द्वीप ब्रिटेन के हाथों में आये । १९६५ में इन्हें आज़ादी मिली । १९६८ में वह गणतंत्र राज्य बना । इब्राहीम नसीर उसी साल उस देश के अध्यक्ष बने और १९७८ तक उस पद पर क़ायम रहे । उसके बाद गयूम इन गणराज्य के अध्यक्ष बने ।

* मालद्वीपों का पूरा जन-समुदाय एक बड़े स्टेडियम में समा सकता है ।
* अधिकतर लोग अंग्रेज़ी बोलते हैं । अरबी शब्दों से मिश्रित सिंहला जैसी दिहेपी भाषा की भी यहाँ प्रधानता है ।
* इस देश में राजनैतिक दल, पोस्टाफ़ीस तथा प्रत्यक्ष कर नहीं हैं ।
* समुद्री तट के रक्षक-दल के अलावा, प्रत्येक रूप से कोई रक्षा-शाखा यहाँ नहीं है ।
* इस देश में कारागार नहीं है । हिंसात्मक अपराध भी नहीं के बराबर हैं ।
* इस देश की आर्थिक स्थिति मछली-उद्योग तथा पर्यटन शाखाओं पर आधारित हैं ।

राजा की नींद

सुवर्ण देश के राजा ने नींद में एक सपना देखा। उस सपने में उसने नल महाराज को देखा। नल ने उसके लिए एक नया पकवान बनाया। उस पकवान का स्वाद बहुत ही रुचिकर और अद्भुत था। राजा को अच्छी तरह से याद है कि नल महाराज ने वह पकवान कैसे बनाया। राजा ने सोचा कि ऐसा पकवान अपने रसोइसे से भी बनवाऊँ। दूसरे दिन वह स्वयं रसोई-घर में गया।

वहाँ जाने पर राजा ने देखा कि रसोइये ने कोई पकवान बनाया है और उसे थाली में परोसकर मज़ा लेते हुए थोड़ा-थोड़ा खाये जा रहा है। उससे जो सुगंध आ रही थी, वह बिलकुल सपने में देखे हुए पकवान की सी थी। राजा ने रसोइये से पूछा कि वह क्या है?

राजा को देखकर रसोइया धबराते हुए बोला "महाराज, यह आपके खाने लायक़ पकवान नहीं है। इसमें खटाई और तीखापन अधिक हैं। इसके खाने से नींद नहीं आती। मैं यह बहुत पसंद करता हूँ। आपके लिए मूल्यवान पदार्थों से रसोई बनाता हूँ और अपने लिए यह सस्ती रसोई बनाकर बहुत ही तृप्ति से खाता हूँ।"

रसोइये ने जो पकवान बनाया, उसका एक हिस्सा उसके मना करते हुए भी राजा ने उससे लिया और खाया। सचमुच ही उस रात को राजा को नींद नहीं आयी। उसे लगा कि पेट में आग सुलग रही है। गले में भी कुछ-कुछ हो रहा है। वह पलंग से उठ खड़ा हुआ और महारानी से बोला कि मुझे नींद नहीं आ रही है।

रानी नींद में ही ऊँघती हुई बोली "आप

रमण गुप्ता

हो रहा है। महाराज ने भी शर्म के मारे खाये हुए पकवान के बारे में भी बताने से हिचकिचाया।

"हमारा खर्चा बढ़ रहा है। आमदनी कम हो रही है। इसके बारे में आप चिंतित हों तो काम कैसे चलेगा? ऐसी समस्याओं का सामना तो हर देश को करना पड़ता है।" कोशाधिकारी ने कहा।

"कुछ देशद्रोही पड़ोस के राजाओं से मिल गये हैं और हमारे राज्य पर आक्रमण करके इसे अपने अधीन करना चाहते हैं। इसके बारे में परेशान होकर आप अपनी नींद खराब क्यों करते हैं? हम भी इसके विरोध में कोई व्यूह रचेंगे और शत्रु को अवश्य ही कुचल डालेंगे।" सेनाध्यक्ष ने कहा।

"राजकर्मचारियों में घूसखोरी बढ़ रही है। हम जो सुविधाएँ जनता को प्रदान कर रहे हैं, वे उन तक पहुँच नहीं रही हैं। इस कारण जनता बहुत ही असंतृप्त है। यह असंतृप्ति दिन-ब दिन बढ़ती जा रही है। इनके बारे में चिंतित होकर अपनी नींद ख़राब करने से क्या फ़ायदा।" मंत्री ने कहा।

इस बात की चिंता मत कीजिये कि राजकुमार सुखभोग में डूबा हुआ है। वह सब विद्याओं में पारंगत है। अपनी ज़िम्मेदारयाँ भली-भांति जानता है। यह उम्र ही सुख भोगने की है। इसलिए आराम की ज़िंदगी गुज़ार रहा है। कुछ समय तक यह सिलसिला तो चलता ही रहेगा।"

राजा को अब तक मालूम नहीं था कि राजकुमार सुख-भोग में मस्त है। नींद उचट जाने के कारण राजा ने राजवैद्य को बुलवाया। वैद्य के साथ कोशाधिकारी, सेनाध्यक्ष और मंत्री भी आये।

वैद्य ने राजा की परीक्षा ली और कहा कि नींद ना आने का कारण मालूम नहीं

राजा सीधे राजमाता के पास गया। उस समय राजमाता जागी हुई थी। अपने आप वह कुछ बड़बड़ा रही थी। बेटे को देखते ही वह बोली" मुझे मालूम है, तुम्हें नींद नहीं आ रही है। बेटा सुख-भोग में मस्त है, खज़ाने में धन घट गया है। पड़ोस के

राजा इस देश पर कब्ज़ा पाना चाहते हैं, देश में अनीति फैली हुई है, इन्हीं के बारे में सोचने से भला कौन राजा सुख की नींद सो सकता है? तुम्हारी परिस्थिति से मैं परिचित हूँ। यही सोचती हुई बैठी रहती हूँ। नींद ही नहीं आती।" राजमाता ने कहा।

"माताश्री, मेरे निद्रा-भंग का कारण इन कारणों में से एक भी नहीं है। भोजन में परिवर्तन हुआ है, इस कारण मैं सो नहीं पा रहा हूँ" राजा ने कहा।

इसपर राजमाता हँस पड़ी और बोली "बचपन से ही तुम्हारा यही स्वभाव है। उम्र हो गयी लेकिन स्वभाव में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। अपने दुख का कारण तुम स्वयं नहीं जानते। जब राजा मस्त सोता है तो इसका मतलब यह हुआ कि वह देश की समस्याओं से मुक्त है। समस्याओं के होते हुए भी जो राजा सो पाता है, वह देश के लिए नष्टदायक सिद्ध होगा।"

कुछ भी बोले बिना राजा माँ के पैरों को छूकर प्रणाम करके वहाँ से चल पड़ा। अब तक वह यही समझ रहा था कि पारिवारिक समस्यायें माताश्री हल कर रहीं हैं। राज्य की देखभाल कोशाध्यक्ष, सेनाध्यक्ष और मंत्री कर रहे हैं। इनका विश्वास करके वह निश्चिंत था। लेकिन अभी-अभी मालूम हुआ कि वे सब यह समझ रहे हैं कि स्वयं राजा इन समस्याओं के बारे में गंभीर रूप से सोच रहे हैं।

इतनी गंभीर समस्याओं के होते हुए भी इतनी लंबी अवधि तक वह स्वयं सुख भोगता रहा, निर्विघ्न सोता रहा। राजा अपनी इस लापरवाही पर बहुत ही लज्जित हुआ। जान बूझकर या अनजाने में रसोइये ने राजा की आँखें खोल दीं। राजा ने उस रसोइये को क़ीमती भेंट दी।

रसोइया तो ड़र रहा था कि उसके पकवान से राजा का निद्रा-भंग हो गया है। पर उसे जब भेंट मिली तो उसकी खुशी का ठिकाना ना रहा।

शनिदोष

गाजा नामक गाँव में कृष्ण पाँडे नामक एक पुरोहित रहा करता था। उसे केवल पौरोहित्य संबंधी श्लोक ही मालूम थे। परंतु बताता रहता था कि मैं ज्योतिष शास्त्र में प्रकांड पंडित हूँ। भूत, वर्तमान, भविष्य को ठीक-ठीक बता सकता हूँ। ग्राम की जनता उसकी बातों का विश्वास करती थी और ज्योतिष-शास्त्र में उसे प्रकांड पंडित मानती थी।

इस प्रकार कभी-कभी लोगों की नादानी का फ़ायदा उठाकर कहा करता था कि गाँव का अशुभ होने वाला है, पशुओं को छूत की बीमारी होनेवाली है। वह यह भी कहता था कि इनकी रोकथाम के लिए यज्ञ करने होंगे, पूजाएँ करनी होंगी। यों उनसे काफ़ी धन ऐंठता था।

उस समय रमण नामक एक युवक अध्यापक बनकर उस गाँव में आया था। पाँडे के घर के बग़ल में ही एक छोटे से घर में वह रहने लगा। जब लोग कहा करते थे कि पाँडे उत्तम श्रेणी का ज्योतिष-शास्त्री है तो वह सुनता और चुप रह जाता था।

एक दिन शाम को पाँडे ने बातों ही बातों में रमण से कहा "पुरोहित का काम हमारे वंश की परंपरा है। मेरे दादा-परदादा भी यही काम करते थे, इसलिए मैं भी अपने वंश की परंपरा को बनाये रखने के लिए यह काम कर रहा हूँ। मैं तो ज्योतिष-शास्त्र में प्रकांड पंडित हूँ। इस शास्त्र में मुझ जैसा ज्ञानी तो ढूँढ़ने पर ही मिलता है। ज्योतिष-शास्त्र का मेरा ज्ञान संपूर्ण है। तुम्हारा मुख देखकर तुम्हारा भविष्य बता सकता हूँ। सुनो, एक महीने के अंदर तुम तीव्र अस्वस्थ हो जाओगे। तुम्हारी आर्थिक स्थिति भी बहुत ही विगड़ जायेगी। इसका एक ही कारण है, और वह है शनिदोष।"

पाँडे की इन बातों से रमण बिलकुल नहीं घबराया । निर्भीक होकर उसने पूछा "इस शनिदोष से बचने का क्या कोई उपाय नहीं?"

"है क्यों नहीं । ऐसी आपदाओं से बचने के लिए ही तो हमारे पूर्वजों ने ज्योतिष-शास्त्र की सृष्टि की है । तुम्हें इस शनि की शांति करानी होगी । इस शांति-यज्ञ के कार्यक्रमों में प्रधान कार्यक्रम है, मुझ जैसे पंडित को गोदान ।"

रमण क्षण भर सोचकर बोला "गोदान करना हो तो कम से कम पाँच सौ रुपये चाहिये । मेरे पास तो केवल दो सौ रुपये ही हैं ।"

उसके इस उत्तर पर पाँडे हँस पड़ा और बोला "कितने नादान हो तुम । तुम्हारे हाथों पाँच सौ रुपयों का खर्च थोड़े ही होने दूँगा? शनिदोष के कारण तुम उलझनों में उलझनेवाले हो । इन उलझनों से तुम्हें उबारना मेरा प्रथम कर्तव्य है । मेरे पास एक गाय है । दो सौ रुपयों में उसे तुम्हें बेच दूँगा । शनिवार का दिन अच्छा दिन है । पूजा के बाद वह गाय मुझे दान में दे देना ।"

रमण ने उस रात को पाँडे को दो सौ रुपये दिये और गाय को अपने घर ले आया । पाँडे को इस बात की खुशी थी कि उसे तीन सौ रुपये का लाभ हुआ है ।

चार दिनों के बाद शनिवार को रमण के घर में पूजा का कार्यक्रम संपन्न हुआ । पूजा के बाद पाँडे ने रमण से कहा कि अब गोदान करो ।

इसपर रमण हिचकिचाता हुआ बोला "देखिये पाँडेजी, शनिदोष के कारण क्या सचमुच मैं अस्वस्थ हो जाऊँगा? धन का नष्ट होगा?"

यह सुनते ही पाँडे आग बबूला हो गया और अड़ोस-पड़ोस के लोगों को बुलाकर चिल्लाने लगा "सुना आप लोगों ने । हमारे गाँव में नया-नया आया हुआ अध्यापक का व्यर्थ प्रलाप । आप सब लोगों को मालूम है कि ज्योतिष-शास्त्र में मैं प्रकांड पंडित हूँ । इसका दुर्भाग्य कहिये अथवा कुंडली का प्रभाव, इसे मेरे ज्ञान में विश्वास नहीं है ।" रमण के मुख को तीक्षणता से देखते हुए पाँडे कहने

लगा "कहते हैं, बुद्धि कर्म के अनुसार चलती है । मैं दावे के साथ कह सकता हूँ कि गोदान नहीं करोगे तो इस माह के अंदर ही शनि के प्रभाव से तुम पीड़ित हो जाओगे । मेरी भविष्यवाणी पर विश्वास रखो । चिड़ियाँ जब खेत चुग जाएँ तो पछताने से क्या फ़ायदा!"

पाँडे की इन बातों से रमण टस से मस ना हुआ । कोई सिकुड़न उसके माथे पर नहीं आयी । उसने उपस्थित लोगों के सम्मुख कहा "पाँडेजी, मुझे लगता है, इस गाय के साथ मेरा पूर्वजन्म का संबंध है । हर दिन यह दस सेर दूध देती है । इसलिए किसी भी स्थिति में इस गाय को दान में नहीं दूँगा । परंतु आपके कहे अनुसार शनि के प्रभाव के कारण मुझे नष्ट पहुँचे तो आपके पांडित्य का विश्वास करूँगा और एक गाय के बदले दो गायें दान में दूँगा । अगर एक महीने के अंदर मेरा कुछ नष्ट नहीं हुआ तो यह प्रमाणित हो जायेगा कि आपका शास्त्र निरर्थक है, ढ़ोंग है, ढ़कोसला है । इसलिए एक महीने के बाद ही इस गोदान की बात कीजिये ।" पाँडे उसकी इन बातों से निश्चेष्ट रह गया । वहाँ उपस्थित लोगों ने भी कहा कि अध्यापक रमण की कही बात सही है ।

पाँडे घर आया । उसके मन की शांति भंग हो गयी । उसने अपनी पत्नी से कहा "हमारे गाँव में नया-नया आया हुआ अध्यापक रमण बड़ा पाखंडी लगता है । मैं जानता हूँ, मेरी भविष्यवाणी बेकार जायेगी । देखते-देखते पाँच सौ रुपयों की यह गाय भी हाथ से छूट गयी । दो सौ रुपयों में खरीदकर मुझे नष्ट पहुँचा दिया इसने । अलावा इसके, गाँव में मेरे ज्योतिष-शास्त्र में पंडित होने का विश्वास भी उठ जायेगा ।"

पाँडे की पत्नी ने उसे सांत्वना देते हुए कहा "आप इस गाँव में और पड़ोस के गाँव में पुरोहित का काम कर रहे हैं । इससे जो आमदनी होती है, उसी से हमारा घर-बार ठीक-ठाक चल रहा है, हम सुख से रह रहे हैं । तो फिर भी ज्योतिषी होने का यह ढ़ोग क्यों? किसलिये?"

विचित्र पुष्प
१०

(नागपुरि के राजा ने उत्तुंग के साहस की तारीफ़ की और उसे वचन दिया कि सैनिकों को उसके साथ भेजकर उसकी मदद भी करूँगा । नागपुरि की राजकुमारी मल्लिका ने उत्तुंग से बताया कि नागसिंह नागपुरि के सिंहासन को हस्तगत करने की साज़िश कर रहा है और उससे उसकी साज़िश को भंग करने की सहायता भी मांगी । राजकुमारी के कक्ष से 'शताब्दिका' पुष्प गायब हो गये । उनके अकस्मात गायब हो जाने से राजा को बहुत आश्चर्य हुआ । उसने सेनाधिपति को उन्हें ढूँढ़ निकालने की आज्ञा दी ।) —बाद

सेनाधिपति जैसे ही राजभवन से बाहर आया, उत्तुंग को बुलवाया । उसने सोचा कि 'शताब्दिका' पुष्पों को ढूँढ़ निकालने की ज़िम्मेदारी दलपति नागसिंह को सौंपूँ । लेकिन राजा को यह क़तई पसंद नहीं था कि दलपति शहर में रहे, इसलिए सेनाधिपति ने अपने इस विचार को त्याग दिया । उसको लगा कि यह ज़िम्मेदारी नागसिंह को सौंपने से राजा अवश्य ही अप्रसन्न होंगे ।

'शताब्दिका' पुष्पों के बारे में ही सोचता हुआ सेनाधिपति अपने भवन में पहुँचा । थोड़ी देर बाद उत्तुंग वहाँ पहुँचा और प्रणाम करते हुए बोला "हमें कब निकलना होगा? मेरी नाव समुँदर के ही किनारे है । क्या बाकी नाव तैयार हैं? जो पुष्प मैं यहाँ ले आया था, उनके अलावा बाकी काबूई के घर में हैं । अगर यह मालूम हो जाए कि

हम कब निकलेंगे तो बाक़ी पुष्प भी काबूई के यहाँ से मंगाने का प्रबंध कर सकते हैं ।" उसके स्वर में उत्साह भरा हुआ था ।

"नावें तैयार हो रही हैं । इतने में तुम्हारे साथ जिन सैनिकों को भेजना है, उनको भी चुन रहे हैं । तुम्हारे साथ भेजने के लिए दलपति नागसिंह को बुलवा लिया है । कब जाना है? कैसे जाना है? राक्षस जंतु का सामना कैसे करना है? आदि विषयों पर चर्चा करने के लिए नागसिंह यहीं आनेवाला है" सेनाधिपति ने कहा ।

उत्तुँग ने पूछा "नागसिंह कब आयेगा?"

"अब तक आ जाना चाहिये था । मालूम नहीं, क्यों नहीं आया?" वह यह बता ही रहा था कि दलपति नागसिंह वहाँ आया ।

उसको देखकर उत्तुँग का परिचय कराते हुए सेनाधिपति ने नागसिंह से कहा " यही वह युवक उत्तुँग है, जिसके बारे में मैं तुम्हें बता चुका हूँ । तुम्हें भी अपने साथ आने की जानकारी पाकर बहुत ही खुश है । इस युवक को अपने यहाँ ले जाओ और अपनी यात्रा संबंधी सारे विवरण जान लो । कब और कैसे जाना है? कैसी सावधानी बरतनी है? आदि परस्पर चर्चा करके एक निर्णय पर आ जाओ । हाँ, एक बात ना भुलाना कि राजा हर हालत में इसकी यात्रा को सफल देखना चाहते हैं ।"

नागसिंह मूस्कुराते हुए बोला "आपकी जैसी इच्छा सेनाधिपति जी । हमारी समुद्री यात्रा के बारे में निर्णय करेंगे और शाम तक आपको सूचित करेंगे । स्वयं आपसे मिलने आयेंगे ।" फिर उत्तुँग की तरफ़ देखता हुआ बोला "चलें?"

उत्तुँग भी उसके पीछे-पीछे गया । दोनों नज़दीक के सैनिक शिविर पें पहुँचे । अपने कक्ष में पहुँचते तक नागसिंह ने एक शब्द भी अपने मुँह से नहीं निकाला । उस कक्ष में एक ही आसन था । वह स्वयं उसमें बैठ गया और सामने पड़े एक पाटे पर उसे बैठने को कहा ।

उत्तुँग जब बैठ गया तब नागसिंह ने उससे कहा "राजा ही नहीं, बल्कि सब लोग तुम्हारी यात्रा की तारीफ़ के पुल बाँध रहे हैं । अब मुझे समझाओ कि वह साहस भरी यात्रा क्या है?" उसके सुर में व्यंग्य भरा हुआ था ।

उसके व्यंग्य को उत्तुंग भांप गया । थोड़ी देर के लिए उसका ध्यान बंट गया । उत्तुंग सोच में पड़ गया "आखिर इस नागसिंह को ही मेरे साथ क्यों भेजा जा रहा है? राजकुमारी ने इस नागसिंह के चरित्र के बारे में स्पष्ट बताया है और उसे चेतावनी दी है कि उससे तुम्हें बहुत ही सावधान रहना होगा । मालूम नहीं, राक्षस को पकड़ने में यह मेरी सहायता करेगा या नहीं । ऐन वक़्त पर अगर मुझे यह धोखा देगा तो मैं कहीं का ना रहूँगा । इस स्थिति में मैं अपना कर्तव्य कैसे निभा पाऊँगा? अपने लक्ष्य की पूर्ति कैसे कर पाऊँगा? इसे देखने पर और इसकी बातों से लगता है कि यह बहुत ही गहरा है । अपने मन की बातें आसानी से नहीं बतायेगा । राजकुमारी ने चाहा है कि राज्य के विरूद्ध यह जो पड़यंत्र रच रहा है, उसके बारे में मैं जानूँ । क्या मेरे लिए यह संभव है? पर मुझे धैर्य खोना नहीं चाहिये । किसी भी हालत में राजकुमारी को दिये गये वचन को पूरा करना होगा । मुझे अति जागरूक रहना होगा ।" अपने आप को तक्षण ही उसने संभाल लिया । बिना किसी झिझक या घबराहट के उसने अपनी यात्रा संबंधी पूरे विवरण वताये । उसकी बातें सुनने के बाद नागसिंह ने कहा "इतनी दूरी से अकेले ही चले आये हुए साहसी वीर हो । क्या आगे भी अकेले ही नहीं जा सकते? तुम्हारा अचंचल धैर्य क्या इतने में ही पानी-पानी हो गया?" उसके सुर में व्यंग्य कूट-कूट
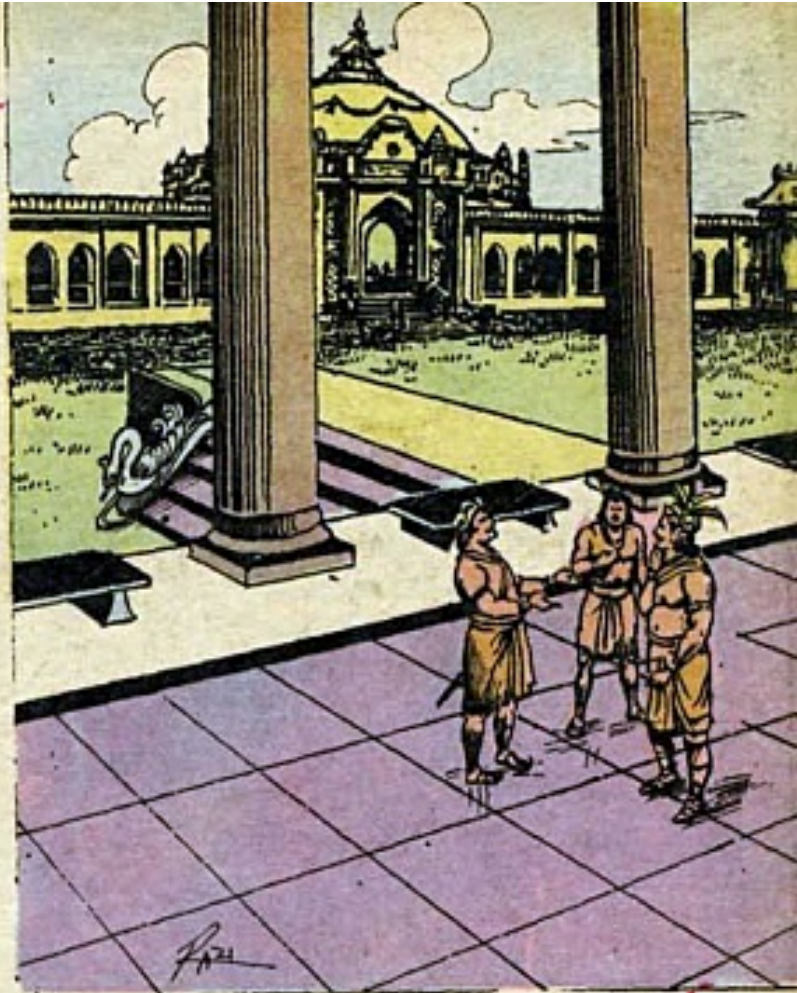
कर भरा हुआ था ।

"मैं अकेले ही जाने के लिए आया था । मुझे मालूम भी नहीं था कि नागपुरि नामक एक राज्य भी है । लेकिन इस देश का राजा दयालू है । उन्होने मुझपर दया दिखायी और मेरे साथ कुछ वीरों को भेजने का वादा किया । मेरा उद्देश्य तो यह है कि उस राक्षस जंतु को मानव के निवास- स्थान से, जितनी दूर हो सके, ले जाऊँ और छोड़ दूँ । ऐसा करने से केवल माणिक्यपुरी ही नहीं, बल्कि आपकी नागपुरि भी सुरक्षित रहेगी ।" उत्तुंग ने निर्भीकता से कहा ।

'नागपुरि राज्य के बारे में चिंता करना छोड़ दो । राक्षस जंतु क्या, कोई भी हमारा बाल बाँका नहीं कर सकता । हम शत्रुओं
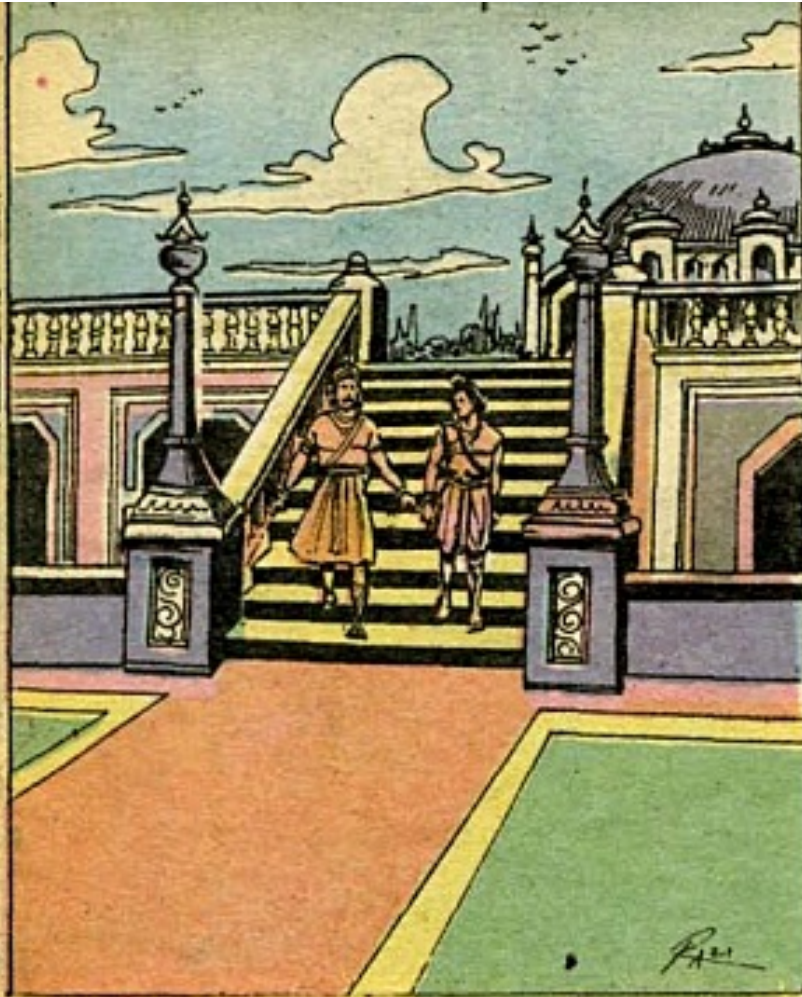
से अपने राज्य की रक्षा स्वयं कर सकेंगे। इसके लिए हमें तुम्हारी मदद चाहिये भी नहीं। अब तुम उस राक्षस जंतु के बारे में बताओ। तुमने तो कहा था कि तुमने उस राक्षस जंतु को देखा है। मेरी तो समझ में नहीं आता कि इस ज़माने में राक्षस जंतु हैं? होंगे? तुमसे गढ़ी यह कहानी सुनने के लिए हम कोई बुद्धू नहीं हैं।" नागसिंह व्यंग्य से हँसता हुआ बोलने लगा।

"आप विश्वास करें या न करें, लेकिन यह सौ फ़ी सदी सच है। मैने उस राक्षस जंतु को अपनी आँखों से देखा है। माणिक्यपुरी के समुद्री तट पर उसने जो भयंकर दृश्य खड़े कर दिये, उसके प्रत्यक्ष साक्षी हैं हमारे सैनिक। उसने जहाँ-जहाँ अपने पाँव रखे, वहाँ के पेड़-पौधे, घर आदि सब के सब धराशायी हो गये। कितने ही इन्सान उसके शिकार हो गये। इसीलिए हमारे राजा चाहते हैं कि उस जंतु को जितनी दूर हो सके, ले जाया जाए और छोड़ा जाए। हमें भी यह निश्चित रूप से मालूम हुआ कि वह जंतु 'शताब्दिका' पुष्पों के लिए ही माणिक्यपुरी आ रहा है। इसीलिए इन पुष्पों को लेकर उसे सुदूर प्रांत में ले जाने का इरादा लेकर मैं निकला हूँ। अगर आप राक्षस जंतु से ड़रते हों तो मत आइये। मुझे पूरा विश्वास है कि मैं अकेले ही यह काम कर सकूँगा" उत्तुंग ने दृढ़ता भरे स्वर में कहा।

"ड़र और मुझे? राक्षस जंतु को देखकर मैं ड़रूँगा? छी, छी, यह वीर नहीं जानता कि ड़र क्या चीज़ होती है? तुम यह बात मत भूलना कि मैं दलपति हूँ और प्राणों की भी बाज़ी लगाकर लड़नेवाला योद्धा हूँ।" नागसिंह ने कहा।

"माणिक्यपुरी में भी बहुत से सैनिक व योद्धा हैं। लेकिन उनको लगा है कि राक्षस जंतु के सामने अपने शक्ति-सामर्थ्यों का कोई उपयोग नहीं हो पायेगा। इसीलिए हम सबने मिलकर यह उपाय सोचा है, यह रास्ता ढूँढा है" उत्तुँग ने कहा।

"अच्छा, अब अपनी बात रहने दो। यह तो बताओ कि तेरे लाये हुए वे पुष्प अब कहाँ हैं? क्या वे तुम्हारे कमरे में हैं? वे कुल कितने होंगे? दो या तीन?" नागसिंह

है, इतना ही मैं जानता हूँ। मुझे यह तो मालूम नहीं कि वे पुष्प राजभवन में कहाँ रखे गये हैं?" उत्तुंग ने कहा।

"तुम उनकी चिंता मत करो। मैं स्वयं राजा से पूछकर जान लूँगा। क्या तुम्हें मालूम है कि महारानी मेरी दीदी है?" नागसिंह ने हँसते हुए पूछा।

उत्तुंग ने बड़ी नादानी से जवाब दिया "अच्छा, यह बात तो मुझे अभी-अभी मालूम हुई हैं। जानकर बहुत खुश हुआ।" अपनी बातों से उसने प्रकट ही नहीं होने दिया, मानों वह इस संबंध में कुछ जानता हो!

"हमारे निकलने की बात अच्छी तरह सोच-विचारकर तुम्हें सूचित करूँगा। उसके बाद दोनों मिलकर सेनाधिपति के पास जाएँगे। तब तक तुम अपने अतिथि-गृह में रहो" नागसिंह ने बताया।

उत्तुंग वहाँ से निकलकर अपने अतिथिगृह में पहुँचा। वहाँ वह इस प्रतीक्षा में बैठा रहा कि कहीं से शायद कोई खबर आये। दुपहर हो गयी, परंतु कोई बुलावा नहीं आया। शाम हो गयी। किन्तु दलपति, सेनाधिपति, राजा या राजकुमारी से कोई खबर नहीं आयी। उसे मालूम नही था कि राजकुमारी के कक्ष से 'शताब्दिका' पुष्प गुम हो गये हैं। दूसरे दिन प्रातःकाल सूरज के चढ़ने के बाद पहाड़ी क़बीले का काबूई जल्दी-जल्दी में उत्तुंग के अतिथि-गृह में आया। उत्तुंग ने उसे देखते हुए आतुर हो पूछा "क्या बात है?"

ने पूछा।

"दो तीन नहीं, बहुत हैं। विकसित पुष्पों को इकट्ठा करके ले आया हूँ। जब मेरी नाव उलट गयी, तब कुछ समुद्र में बह गये।कुछ पुष्प राजा को दिया है। बाक़ी पुष्प काबूई के पास हैं। निकलने के पहले उन सब को लेना है" उत्तुंग ने कहा।

"मतलब यह हुआ कि अगर वे पुष्प मैं देखना चाहूँ तो मुझे राजभवन जाना होगा।" नागसिंह ने पूछा।

"हाँ, लेकिन" कुछ और कहते हुए उत्तुंग रुक गया। "रुक क्यों गये? अब वे पुष्प क्या राजभवन में नहीं हैं?" नागसिंह ने ऊँचे सुर में गरजते हुए पूछा।

"राजकुमारी राजा के यहाँ से ले गयी

''तुम्हारे लाये हुए 'शताब्दिका' पुष्प दिखाई नहीं दे रहे हैं । मैने अपनी बेटी चित्रा से बार-बार कहा है कि तुम्हारे माँगने पर हमें उन फूलों को तुम्हें लौटाना है, इसलिए सावधानी से उन्हें सुरक्षित रखना । उसने भी वे फूल अपनी किसी भी सहेली को नहीं दिया । अपने ही कमरे में बड़ी सावधानी से रखा। आज सबेरे जागने के बाद देखा तो वे फूल नदारद हैं । रात को उसके कमरे में किसी के आने की आहट भी नहीं हुई है । अपनी सहेलियों से उसने पूछ भी लिया । यह सोचकर कि उन्होने शायद हँसी-हँसी में कहीं छिपाया हो । लेकिन उन्होने साफ़ बता दिया कि वे कुछ नहीं जानती हैं । पता ही नहीं चल पा रहा है कि फूल आख़िर ग़ायब हुए कैसे? सब कुछ विचित्र लग रहा है । राक्षस जंतु के वहाँ आने की कोई गुँजाइश भी तो नहीं है ।'' काबूई बहुत ही चिंतित होता हुआ बोला ।

''समुद्री तट के चट्टानों के उस संकीर्ण मार्ग से उतना बड़ा राक्षस जंतु आ नहीं पायेगा ।पल भर के लिए समझ लो, वह आ भी गया तो जहाँ वह आये, वहाँ तो नाश ही नाश होता है ।इसलिए यह काम किसी भी हालत में राक्षस जंतु का नही हो सकता'' उत्तुंग ने ज़ोर देकर कहा ।

काबूई ने निराशा भरे स्वर में कहा ''तो यह काम किसका हो सकता है?''

थोड़ी देर तक उत्तुंग मौन रहा और फिर बोला ''दलपति नागसिंह कल ही नगर में आया है । सेनाधिपति और राजा ने उसे मेरे साथ भेजने का निश्चय किया है । बातों
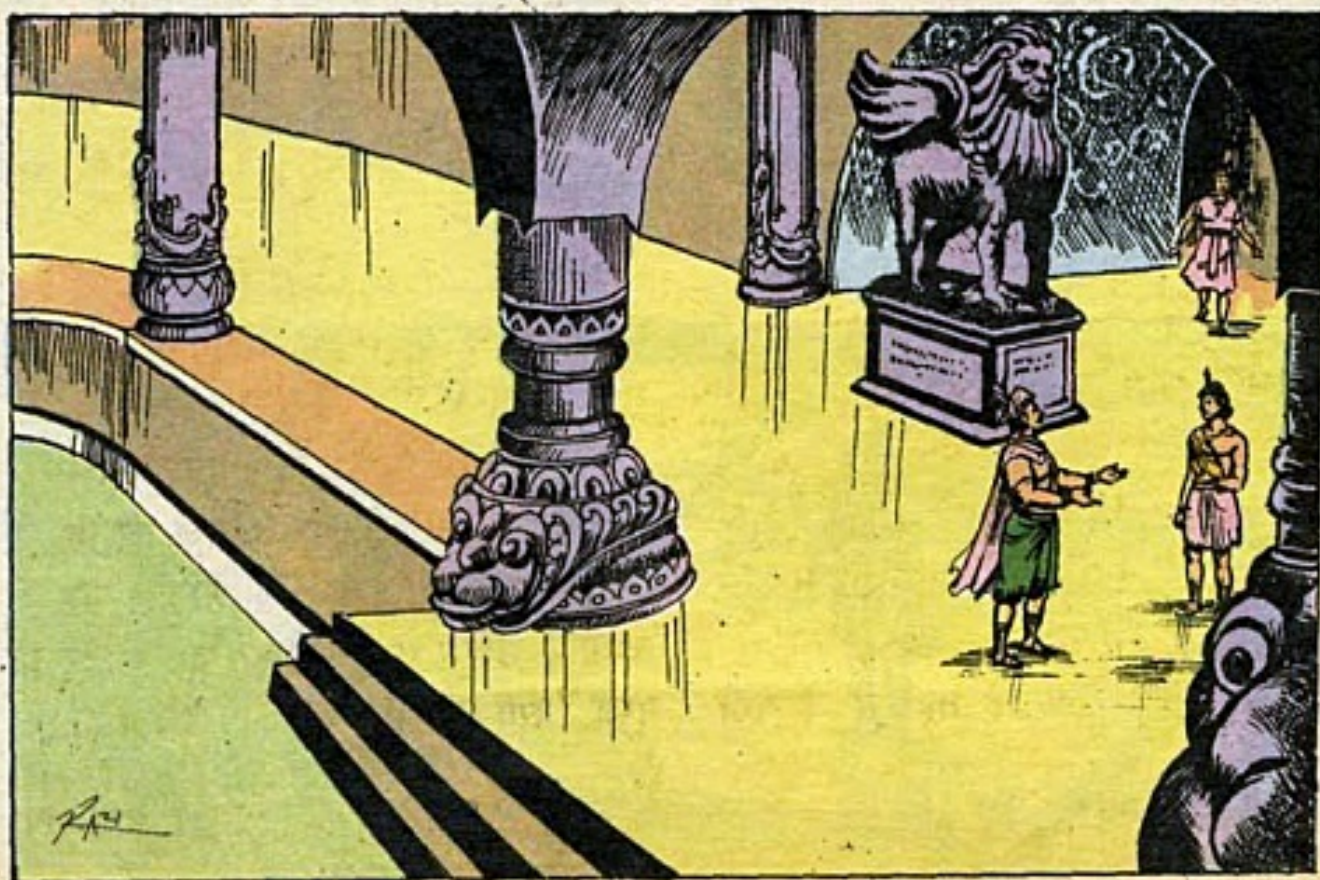
बातों मे मैने ही उससे बताया था कि कुछ 'शताब्दिका' पुष्प तुम्हारे पास हैं। राजकुमारी ने मुझसे बताया भी था कि नागसिंह नागपुरि सिंहासन को अपने कब्ज़े में करने की साज़िश कर रहा है। उससे राजा को भी ख़तरा होने की संभावना है। मुझे लग रहा है कि नागसिंह ने ही तुम्हारे घर से 'शताब्दिका' पुष्पों की चोरी की है।" फिर उसने काबूई को राजकुमारी की बतायी सब बातें बतायीं।

"नागसिंह राजा से जलता है, वह नागपुरि के सिंहासन पर आसीन होने के सपने देख रहा है, यह बात मैने पहले ही सुन रखी थी। बड़े दुर्भाग्य की बात है कि ऐसे नीच को तुम्हारी रक्षा के लिए तुम्हारे साथ भेजने का निश्चय हुआ है। तुम्हें उससे बड़ी सावधानी से बरतना होगा। तुम यहीं रहो, क्योंकि दलपति ने तुम्हें ख़बर भेजने का आश्वासन दिया है। मैं जाऊँगा और राजा को पुष्पों के गुम हो जाने की बात सुनाऊँगा।" कहकर काबूई राजा के पास गया।

काबूई की बात सुनकर राजा ने कहा "तुम्हारे घर में रखे गये 'शताब्दिका' पुष्प भी दिखायी नहीं दे रहे हैं। राक्षस जंतु को ही नहीं, लगता है, किसी और को भी इन पुष्पों की आवश्यकता आ पड़ी है।" थोड़ी देर सोचने के बाद उसने सेनाधिपति को राजभवन में तुरंत आने की ख़बर भेजी।

सेनाधिपति के आते ही राजा ने कहा "दुर्जय, काबूई के घर से भी पुष्प ग़ायब हो गये हैं। लगता है कि कोई गहरा षड़यंत्र हो रहा है।"

"प्रभु, सब विचित्र लग रहा है। जल्दी ही षड़यंत्र रचनेवालों का मैं पता लगा कर ही रहूँगा।" सेनाधिपति ने कहा।

काबूई ने सेनाधिपति को वे सब बातें बतायीं, जो उत्तुंग ने उससे कही थी।

"अच्छा, तो यह बात है। नागसिंह को इसकी जानकारी है कि 'शताब्दिका' पुष्प तुम्हारे घर में हैं।" सिर हिलाते हुए सेनाधिपति ने कहा और गंभीर सोच में पड़ गया।

—सशेष

राजा का महावत

धुन का पक्का विक्रमार्क फ़िर से पेड़ के पास गया। यथावत् उसने पेड़ से शव को उतारा और उसे अपने मज़बूत कंधों पर ड़ाल लिया। फ़िर श्मशान की ओर चल पड़ा। तब शव के अंदर के बेताल ने कहा "तुम जिस लगन तथा एकाग्रता से अपने कार्य को साधने का आग्रह दिखा रहे हो, वह अविस्मरणीय है।कार्य साधने की तुम्हारी यह तल्लीनता मुझे विस्मय में ड़ाल रही है। परंतु क्या लाभ? इस भयंकर श्मशान में हर बार तुम अपने कार्य में विफल हो रहे हो। तुम्हारी लगन, तल्लीनता, सहनशक्ति कब तक तुम्हारा साथ देंगी? अपने कार्य में सफल होने के पहले ही तुम्हें बुढ़ापा अपने कब्ज़े में ले लेगा। हर प्राणी के लिए मुख्यतया मनुष्य के लिए बुढ़ापा एक शाप की तरह है।.तुम भी जब उस बुढ़ापे में क़दम रखोगे, तब तुम्हारा लोकज्ञान तथा तुम्हारी चेतना किसी काम के नहीं

बैताल कथा

रहेंगे । मुझे भय है कि इस स्थिति में उदयपुर के राजा सूर्यसिंह की तरह तुम भी कहीं अनुचित तथा बुद्धिहीन निर्णय नहीं कर बैठो । उदाहरणस्वरूप मैं उस राजा की कहानी सुनाता हूँ । अपनी थकावट दूर करते हुए तुम इसे ध्यान से सुनो और हो सके तो इससे सबक सीख लेना ।" बेताल आगे यों राजा सूर्यसिंह की कहानी सुनाने लगा ।

उदयपुर का राजा सूर्यसिंह बहुत ही पराक्रमी और दयालू राजा था । न्याय के रास्ते पर चलकर, धर्म का पालन करके उसने जनता के हृदयों में सुस्थिर स्थान स्थापित कर लिया । लेकिन बेचारे की संतान ना होने के कारण सिंहासन पर आरूढ़ होनेवाला कोई वारिस नहीं रहा ।

संतानहीन होने के दुख से वह गला जा रहा था । उस दुख के साथ-साथ उसने बुढ़ापे में क़दम रखा । शासन की ज़िम्मेदारी उसने मंत्रियों के सुपुर्द किया । इस वजह से क्रमशः शासन में कुछ अवांछित परिवर्तन आते गये, जिनसे सूर्यसिंह अनभिज्ञ था । राजकर्मचारियों में घूसखोरी प्रबल होती गयी । राज्य में चोरों की संख्या बढ़ गयी ।

सूर्यसिंह के दरबार में भद्र नामक एक महावत था । वह भी क़रीबन राजा की ही उम्र का था । बहुत समय से राजा के हाथी का वह महावत था ।

एक बार भद्र बीमार पड़ा । सूर्यसिंह को जब उसकी बीमारी का पता चला, तो इलाज के लिए उसे उसने थोड़ा-सा धन भेजा । पंद्रह दिनों के बाद भद्र जब थोड़ा-बहुत चंगा हो गया तो वह राजा से मिला और बोला "महाराज, मुझे माफ़ करेंगे तो आपको अपने मन की बात बताना चाहूँगा ।"

"अवश्य । निस्संकोच अपने मन की बात बताओ ।" राजा ने कहा ।

"महाराज, मेरे पुत्र प्रताप ने गुरुकुल में विद्याभ्यास किया है । फिर भी उसकी यही इच्छा है कि कोई और नौकरी करने के बदले मेरा ही पेशा अपनाऊँ । हाथियों पर कब्ज़ा पाने में वह बहुत ही माहिर है । आपसे प्रार्थना है कि उसे राज्य के प्रधान हाथी का महावत बनाएँ ।"

सूर्यसिंह ने कहा "इसके लिए इतना गिड़गिड़ाने की क्या ज़रूरत है? अपने बेटे

को एक बार गजशाला में आने को कहो । देख भी लेंगे कि हाथी पर कब्ज़ा पाने में वह कितना पटु है ।"

दूसरे दिन प्रताप गजशाला आया । वहाँ कालमेघ नामक एक हाथी था । वह बड़ा सुदृढ़ और मस्त हाथी था । सबों का समझना था कि उसपर कब्ज़ा पाना बहुत ही कठिन काम है । प्रताप को आदेश मिला कि कालमेघ पर वह चढ़े और राजप्रासाद के चारों ओर चक्कर काटे ।

प्रताप को देखते ही कालमेघ ने ज़ोर से चीत्कारा । प्रताप थोड़ा भी भयभीत नहीं हुआ । बड़े ही नैपुण्य से वह उस पर बैठ गया और अंकुश से उसे अपने काबू में किया । फिर राजप्रासाद के चारों ओर चक्कर काटा ।

राजा ने उसका नैपुण्य देखा और उसे वज्रदंती नामक राज्य के हाथी का प्रधान महावत बनाया ।

हर साल की ही तरह, उस साल भी, सूर्यसिंह के जन्म-दिन के अवसर पर राजधानी की सब गलियाँ सजायी गयीं ।

हाथी के हौज़े पर आसीन होकर नगर की गलियों से गुज़रनेवाले राजा को देखने के लिए लोग कतारों में खड़े थे ।

जैसे ही राजा हाथी पर लगे हौज़े पर आसीन हुआ, प्रताप ने धीरे से उसे आगे चलाया ।उस समय आकाश में घने बादल छाये हुए थे ।

सड़कों पर कहीं-कहीं स्वागत के तोरण बंधे हुए थे । हाथी उनके नीचे से होता हुआ जाने लगा । एक बहुत बड़े स्वागत-द्वार
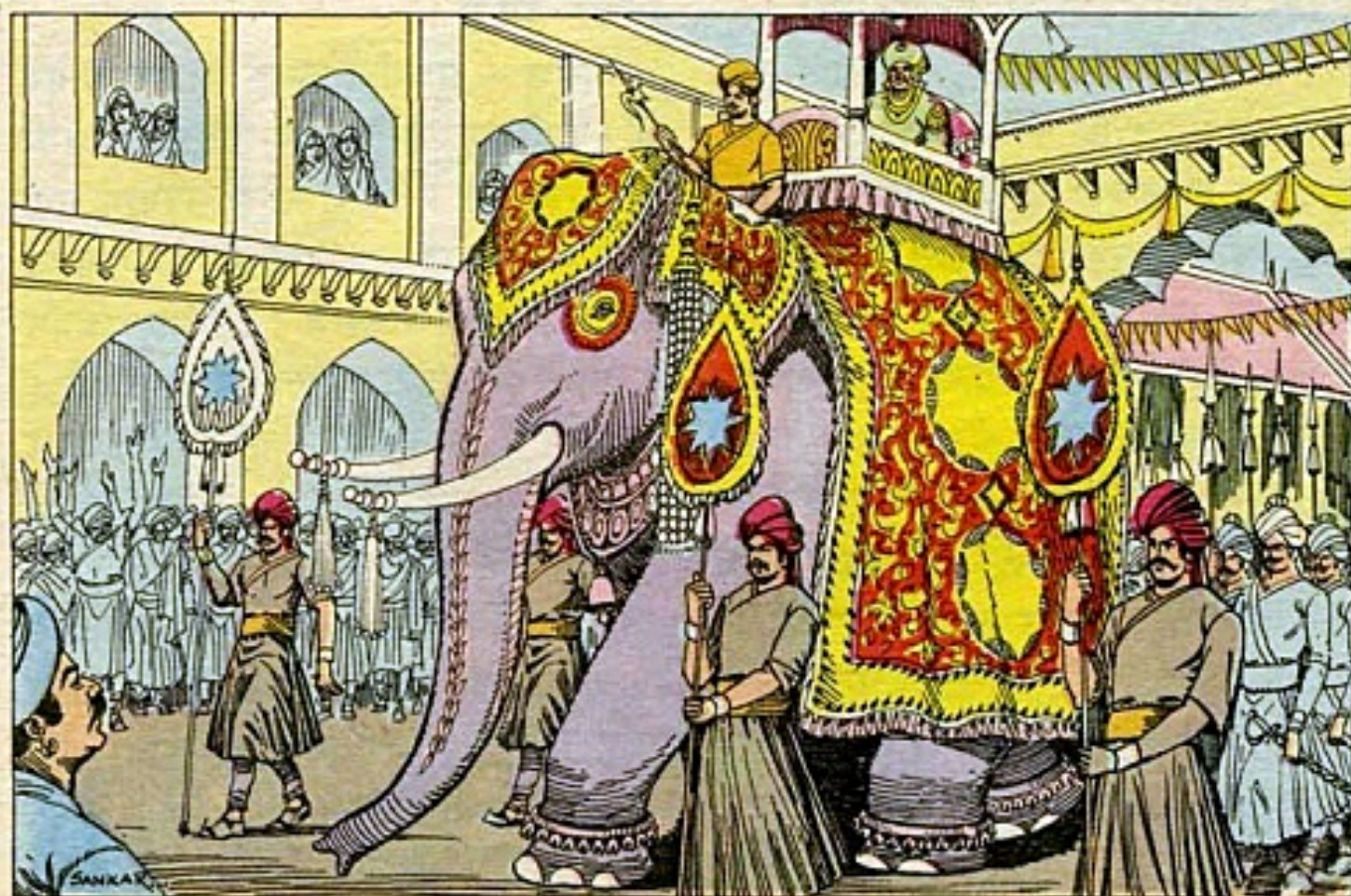
पर जब हाथी पहुँचा तब अकस्मात बिजली कड़की और उस स्वागत-द्वार पर गिरी ।

उस बिजली के गिरने से स्वागत-द्वार हाथी पर गिरने ही वाला था कि प्रताप ने कुशलता से अंकुश से हाथी को सावधान किया और देखते ही देखते आगे बढ़ गया । यों राजा मौत के मुँह से बच गया ।

धीरे-धीरे चलते हुए हाथी को, पल भर में बिजली की तरह तेज़ दौड़ाना गज-विद्या में बहुत ही विशष्ट प्रक्रिया मानी जाती है । इसके लिए मनोधैर्य, सामर्थ्य तथा समय-बोध की नितांत आवश्यकता है । सूर्यसिंह ने प्रताप में इन गुणों को पाया और मन ही मन उसकी भरपूर प्रशंसा की । महाराज ने प्रताप की हृदयपूर्वक सराहाना की और उससे कहा "पूछो, जो भी पूछोगे, तुम्हें देने तैयार हूँ । यह मेरा वचन है ।"

अब प्रताप सोच में पड़ गया । एक ही बार उसके मन में तीन विचार जागे । पहला—अपने दोस्त जनार्दन के बारे में । जनार्दन ने उसके साथ-साथ गुरुकुल में विद्या पायी । उसने राज दरबार में नौकरी के लिए कोशिश की लेकिन कोई फ़ायदा नहीं हुआ । उसने सोचा कि अब उसे नौकरी दिलाना उसकी मैत्री का धर्म है ।

दूसरा-प्रताप के पड़ोस में ही रहनेवाले वीरदास के घर को लुटेरों ने लूट लिया । उसने नगर के उच्च अधिकारी से शिकायत भी की । लुटेरे भी नहीं मिले और उसे किसी भी प्रकार की सहायता भी नहीं दी गयी । उसकी दृष्टि में पड़ोसों की सहायता करना मानव-धर्म है ।

तीसरा.— सुधर्म प्रताप के बचपन के गुरु थे । वे बीमार पड़े तो बहुत-से वैद्यों ने उनकी चिकित्सा की । किन्तु कोई उपयोग नहीं हुआ । यह स्पष्ट बता दिया गया कि राजवैद्य ही उसे ठीक कर सकता है । इसलिए राजवैद्य से उनकी चिकित्सा कराना शिष्य-धर्म है ।

प्रताप ने अपने मन में जगे तीनों विचार राजा को बताया । सूर्यसिंह ने जब उसकी इच्छाएँ सुनीं तो उसे बहुत ही आश्चर्य हुआ । क्योंकि तीनों इच्छाओं में उसका कोई स्वार्थ नहीं था, स्वलाभ नहीं था । उसकी जगह पर और कोई होता तो अपार धन और कीमती भेटें माँगता ।

राजा ने अपना आश्चर्य प्रकट होने नहीं दिया और कहा "तेरी तीनों इच्छाएँ समुचित हैं। लेकिन तुम निर्णय करो और बताओ कि तो किसी एक इच्छा की पूर्ति करूँगा।"

प्रताप बोला "प्रभु, राजकर्मचारियों में बहुत से लोग घूसखोर बन गये हैं। उन्हें कड़ी से कड़ी सज़ा दीजिये और घूसखोरी का निर्मूल कर दीजिये।"

यह सुनकर सूर्यसिंह बहुत ही प्रसन्न हुआ और बोला "पुत्र प्रताप, बहुत दिनों से मुझे एक ग़म खाये जा रहा था कि मेरा कोई वारिस नहीं रहा। मुझे सदा इस बात का रंज रहा करता था कि मेरे बाद मेरे राज्य का क्या होगा? अब मुझे इस ग़म और रंज से छुटकारा प्राप्त हो गया है। तुमने जो माँग की है, उससे मेरे सारे दुख दूर हो गये हैं। निकट भविष्य में तुम्हारा राज्याभिषेक करूँगा और तुम्हें अपना वारिस घोषित करूँगा।"

बेताल ने यह कहानी सुनाकर विक्रमार्क से कहा "राजन्,एक साधारण महावत को राज्य-सिंहासन सौंपकर क्या सूर्यसिंह ने अपनी बुद्धिहीनता. असमंजसता तथा अनौचित्य का प्रमाण नहीं दिया? यह तो स्पष्ट है कि प्रताप के विचारों और इच्छाओं का कोई भी संबंध नहीं। ऐसे एक बेतुके व्यक्ति को वारिस के रूप में चुनना सूर्यसिंह के बुढ़ापे का नतीजा है। बुढ़ापे की वजह से ही उसमें लोकज्ञान लुप्त हो गया है। यों समझ लो कि उसके बुढ़ापे ने उसे सब प्रकार सेअशक्त बना दिया है। राजन्, मेरे इन संदेहों का समाधान दो। अथवा तुम्हारा

सर टुकड़ों में फट जायेगा ।"

राजा ने कहा "कुछ ऐसे व्यक्ति होते हैं, जो मानसिक रूप से उम्र तथा बुढ़ापे से अतीत होते हैं । उनका मन इतना दृढ़ तथा नपा-तुला होता है कि उम्र या बुढ़ापा उनपर किसी प्रकार का प्रभाव ड़ाल नहीं पाता । ऐसा होना प्रकृति के विरुद्ध कदापि नहीं । परंतु हाँ, ऐसे व्यक्ति संख्या में कम अवश्य होते हैं । हाँ, राजा सूर्यसिंह वृद्ध अवश्य हैं, लेकिन प्रताप को वारिस चुनकर उन्होने यह प्रमाण दिया कि उनकी बुद्धि अब भी पैनी है और सही दिशा में सोचने का सामर्थ्य रखती है । प्रताप ने तीन इच्छाएँ व्यक्त कीं, लेकिन राजा ने कहा कि इन तीनों में से किसी एक ही इच्छा की पूर्ति करूँगा । प्रताप ने इच्छा प्रकट की कि घूसखोर राजकर्मचारियों को कड़ी से कड़ी सज़ा दी जाए । इस इच्छा का संबंध दूसरी इच्छाओं से भी है । इस एक इच्छा की पूर्ति से बाक़ी इच्छाओं की पूर्ति का मार्ग खुल जाता है । घूसखोर राजकर्मचारियों की वजह से उसके मित्र को नौकरी नहीं मिल पायी । उन्हीं की वजह से पड़ोसी की संपत्ति की जो लूट-मार हुई, वह फिर से प्राप्त नहीं हो पायी । अब रही, गुरु की चिकित्सा की बात । प्रताप को अच्छी तरह मालूम था कि जब वह व्यक्त करेगा कि मेरे गुरु अस्वस्थ हैं, तब राजा अवश्य ही गुरु का इलाज कराएँगे ही । राजा ने प्रताप की सूक्ष्म बुद्धि को जाना और पहचाना । अलावा इसके, उसने अपने लाभ की कोई बात नहीं की । इससे यह स्पष्ट होता है कि प्रताप ने सदा दूसरों के क्षेम का ख्याल रखा हैं, राज्य की सुरक्षा और कल्याण की उसे बड़ी चिंता है । इन्ही कारणों सेसूर्यसिंहने प्रताप को अपना वारिस चुना है । इसमें तुम्हारे कहे मुताबिक़ ना ही कोई अनुचित बात है, था, ना ही कोई असंबद्ध विषय ।"

राजा का मौन-भंग होते ही वेताल शव को लेकर अध्श्य हो गया और फिर पेड़ पर जा बैठा ।

चंदामामा की ख़बरें

छोटा-सा चूहा, जो पेट में चला गया!

चीन में चूहों की तादाद बहुत ही अधिक है। ये चूहे कई प्रकार के होते हैं। गुवान सियांग नामक गाँव जियान्कस प्रांत में हैं। हाँग होक्सियो नामक एक महिला इसी गाँव में रहती है। एक छोटे चूहे ने इसकी ज़िन्दगी में कुछ गजब ही कर दिखाया। एक रात को वह जब गहरी नींद में थी, तब एक छोटा चूहा उसके मुँह में घुस गया। वह चिल्ला पड़ी तो उसका पति लालटेन लेकर दौड़ा-दौड़ा आया। चूहे की सिर्फ़ पूँछ उसके खुले मुँह में दिखायी दे रही थी। उसने पूँछ पकड़कर उसे बाहर खींचने की कोशिश की। लेकिन उसकी कोशिश नाकामयाब रही। फिर अपनी पत्नी को वह डाक्टर के पास ले गया तो उसने इंजक्शन दिया, दवाएँ दीं। उस महिला को लगा कि तीन दिनों तक वह चूहा उसके पैर में गड़बड़ी करता रहा। इसके बाद तो उसका पता ही नहीं चला।

मुँह भर धुआँ

हर साल अमेरीका में धुआँ फूँकने के खिलाफ़ उत्सव होता रहता है। उस उत्सव के दिन 'जिम' नामक एक सज्जन ने २५५ सिगरेट फूँके और एक नये रिकार्ड की भी सृष्टि की। उसके पीने का ढंग भी कुछ निराला ही था। उसने एक के बाद एक नहीं बल्कि सब सिगरेटें एक ही दम पी लीं। यह इस साल का बड़ा अचंभा था।

कम आयु का विमान चालक

अगस्टिन ओर्टिज नौ साल की उम्र का लड़का है। यह शांटियागो में रहता है। गत अक्टोबर में उसने सिंगिल इंजन का वायुयान चलाया, और एक नये रिकार्ड की स्थापने की। आज तक यही वह छोटा लड़का है, जिसने इतनी कम उम्र में वायुयान चलाया है।

सौं सालों से भी अधिक उम्र की बहनों की आत्मकथा

एलिज़बत डिलानी व सारा डिलानी न्यूयार्क स्टेट के नागरिक हैं। ये दोनों बहनें नीग्रो जाति की हैं। इनका रचित ग्रंथ है "डिलानी बहनों के प्रथम सौ साल।" उनकी यह आत्मकथा काफ़ी मात्रा में बिक रही है। विदुषी सादा डिलानी की उम्र है १०४ साल। दंतवैद्य एलिज़बत की उम्र है १०२ साल। अब भी दोनों स्वस्थ हैं और उनका प्रगाढ़ विश्वास है कि वे और बीस साल जीवित रहेंगी।

अजीब सवाल

युवक एकांबर को मालूम हुआ कि चिदंबरं की दुकान में हिसाब लिखने की नौकरी खाली है। वह उसके पास गया। चिंदबरं ने एकांबर को शिख से नख तक देखा और अपने दाहिने हाथ को आगे फैलाकर पूछा "बताओ तो सही, इन पाँचों उँगलियों में से कौन-सी उँगली बड़ी है?"

"बीच की उँगली।" एकांबर ने कहा। "नहीं, सब उँगलियों की उम्र एक ही होती है" चिदंबरं ने कहा।

फिर चिदंबरं ने अपना बायाँ हाथ दिखाया और पूछा "इनमें से कौन-सी उँगली छोटी है? एकांबर ने बड़े आत्म-विश्वास से कहा "सब उँगलियों की उम्र एक ही होती है।"

"नहीं, कनगुरिया।" चिदंबरं ने झल्लाते हुए कहा। एक क्षण रुककर चिदंबरं ने कहा "बोलो, इससे तुम्हारी समझ में क्या आया है?"

"तुम्हारे यहाँ मुझे नौकरी नहीं मिलेगी" एकांबर ने फट से बोल दिया।

"यह तुम्हारा भ्रम है। मैं तुम्हें यह नौकरी दे रहा हूँ। कल से काम पर लग जाओ।" मुस्कुराते हुए चिदंबरं ने कहा।

एकांबर ने अपना सिर हिलाते हुए स्पष्ट कह दिया "तुम जैसे बेसिर पैर और ऊटपटाँग बात करनेवाले के यहाँ काम करने से तो अच्छा है, भीख माँगना" कहता हुआ वह फ़ौरन वहाँ से चला गया।

–आर. पट्टाभि

चन्दामामा परिशिष्ट-६२

हमारे देश के पशु-पक्षी

बुलबुल

राकेश शर्मा ने कहा "जब मैं अंतरिक्ष से भूमि देख रहा था, तब अन्य देशों से भारत मुझे बहुत ही सुंदर व सुहावना लगा।" मशहूर शायर मुहम्मद इक़बाल ने कहा "सारे जहाँ से अच्छा हिन्दुस्ताँ हमारा।" इसी शायरी में उन्होने आगे कहा "हम बुलबुले हैं इसकी,ये गुलिस्ताँ हमारा।" मतलब यही हुआ ना कि ये बुलबुल पक्षी बग़ीचे की सुँदरता में चार चाँद लगा देते हैं। ये बुलबुल पक्षी एक पेड़ से दूसरे पेड़ पर उड़ते जाते हैं और प्रकृति में कलरव पैदा कर देते हैं।

कहा जाता है कि हमारे देश के बुलबुल नहीं गाते। पर्शिया जाति के बुलबुल ही गाते हैं। इसलिए जहाँगीर की बीबी नूरजहाँ ने इन पक्षियों को पर्शिया से मंगाया। इस जाति के पक्षी आजकल कश्मीर में तथा सरहदी पर्वतों पर अधिकतर पाये जाते हैं। उनका शरीर ऊदे रंग का होता है। सिर काला और गाल सफेद होते हैं।

सिर पर गुच्छा, गाल और पूँछ काले, बाक़ी बदन खाकी और ऊदे रंग के गुल्डुम बुलबुल ही अधिक देखने में आते हैं। पूँछ के पहले भाग में लाल दाग़ होता है। आखिरी हिस्सा सफ़ेद है। लाल नाकवाले बुलबुलों के सिरों पर गुच्छा होता है। इनके शरीर का बाहरी भाग ऊदे रंग का और नीचे का भाग सफ़ेद होता है। छाती पर हार जैसी एक रेखा होती है। लाल नाकवाले बुलबुल को सिपाई बुलबुल कहते हैं।

बुलबुल जोड़ी बनकर रहते हैं और इनमें अक़्सर झगड़े होते रहते हैं। परंतु ये अपने घोंसलों को बहुत ही साफ़-सुथरा रखते है।

अमृता षेर-गिल

उन्तीसवें वर्ष में ही दिवंगत हुईं चित्रकार अमृता षेर-गिल। फिर भी इतनी कम उम्र में ही आधुनिक भारतीय चित्रकला में इस अद्‌भुत महिला चित्रकार ने विशिष्ट स्थान प्राप्त किया।

संपन्न राजा उमरावसिंग षेर-गिल तथा हंगेरी देश की मेरी की पुत्री थी अमृता षेर-गिल। इनका जन्म १९१३ में हंगेरी राजधानी बुडापेस्ट में हुई। उनके पिता उमरावसिंग षेर-गिल संस्कृत, पर्शियन आदि अनकों भाषाओं में पंडित थे।

बचपन में ही अमृता ने चित्रकला के प्रति अभिरुचि दिखायी। १९२१ में उनके पिता भारत आये और सिमला में बस गये। वहाँ के पर्वत तथा आसपास के प्राकृतिक सौंदर्य ने अमृता के मन के मुग्ध कर लिया। उनके माता- पिता ने देखा कि चित्रकला के प्रति अमृता पर्याप्त अभिरुचि रखती है तो उन्होने पारिस नगर के एक सुप्रसिद्ध चित्रकला की पाठशाला में दाखिल किया, जिससे उन्हें चित्रकला की अच्छी शिक्षा यहाँ उपलब्ध हो सके। लेकिन पहले से ही उन्होने भारतीय चित्रकला के प्रति अधिक अभिरुचि दिखायी। उन्हें यूरोप के
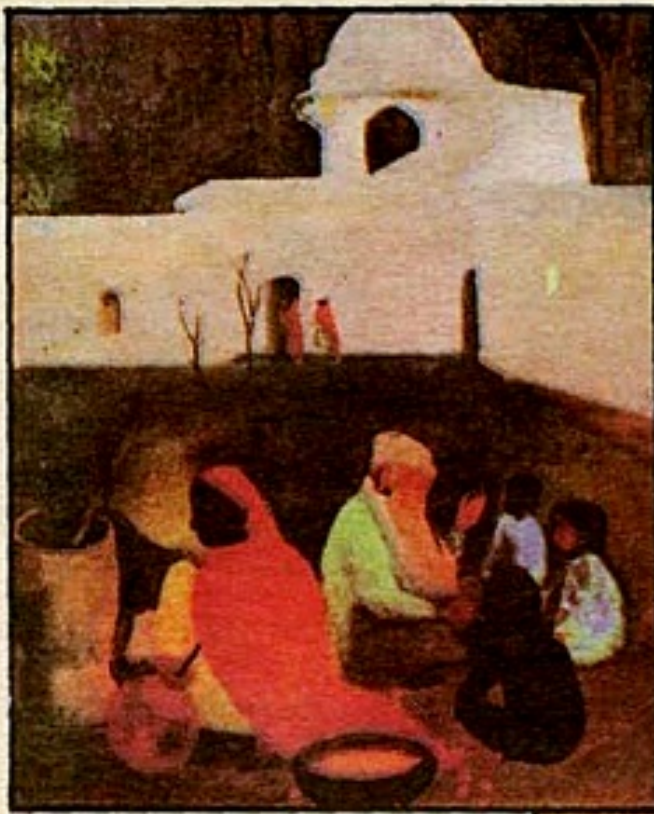
और १९४१ में मृत्यु की गोद में सदा के लिए सो गयीं । वास्तविक और कल्पना का अदभुत मिश्रण है, इनके चित्र । उनके चित्रित मानवों के चित्र सजीव लगते हैं । नूतन मार्गों के अन्वेषी युवकलाकारों के लिए ये आदर्श कलाकार हैं । उन्हें इनके चित्र स्फूर्ति प्रदान करते हैं ।

चित्रों से अधिक भारत के अजंता शिल्पों ने अधिक आकर्षित किया । वे भारत लौटीं और अमृतसर, सिमला प्राँतों की जीवनियों पर चित्र बनाना आरंभ किया । उन्हें भारतीय कला के समीक्षकों का रवैय्या अच्छा नहीं लगा तो १९३८ में यूरोप चली गयीं । वहाँ जाने के बाद हँगेरी के अपने एक रिश्तेदार से शादी की । फिर पाश्चात्य पद्धतियों में चित्र बनाने लगीं । १९३९ में वे फिर भारत लौटीं । भारतीय विषयों को लेकर फिर से चित्र-लेखन किया । पर दुर्भाग्यवश वे अस्वस्थ हो गयीं
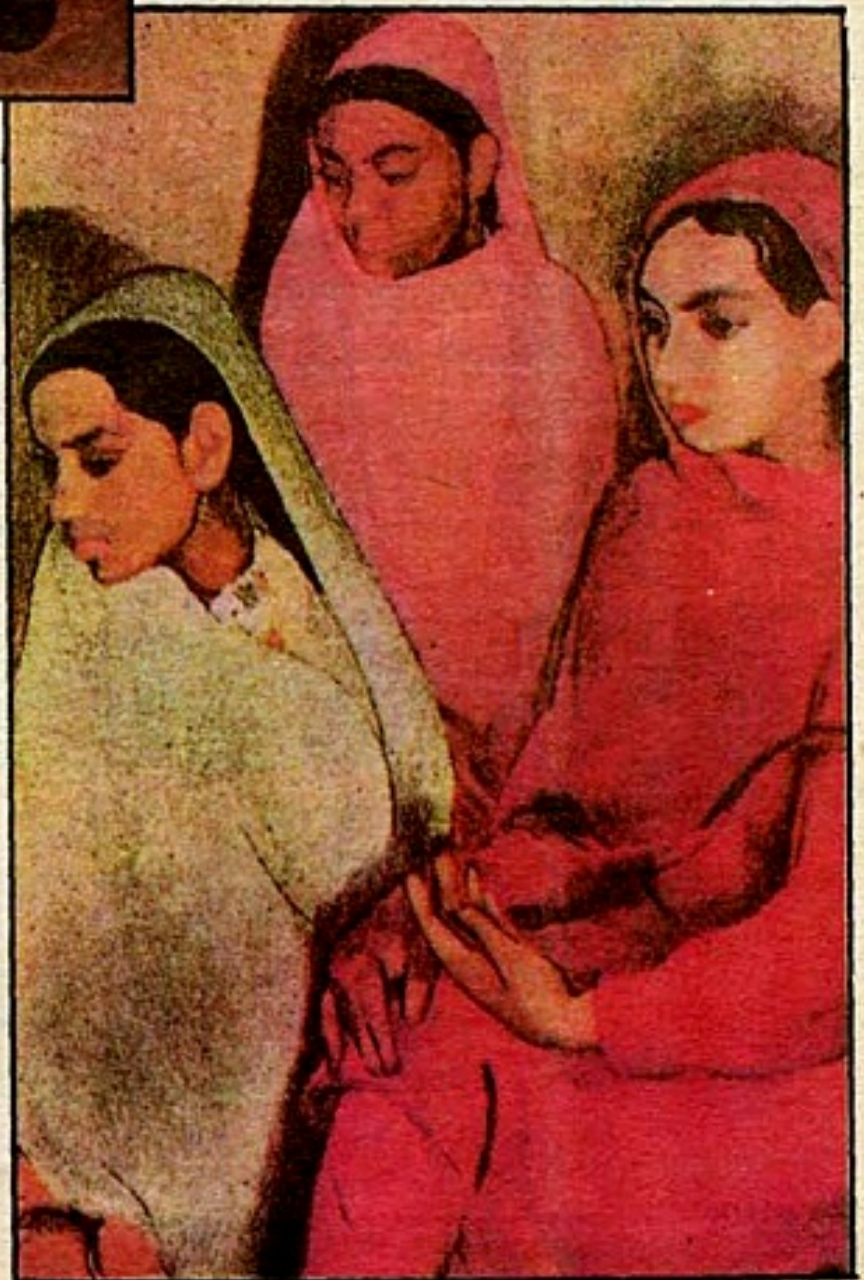
क्या तुम जानते हो?

१. कौन-सा दिवस "संसार का पर्यावरण" दिवस माना जाता है?
२. 'नागार्जुन सागर' बांध किस नदी पर निर्मित है?
३. साढ़े तीन सौ साल पहले टास्मानिया और न्यूज़लैड को किसने खोज जिकाला?
४. "इंग्लीष चानेल' को तैरनेवाला पहला भारतीय कौन था?
५. १९६१ अप्रैल १२, १९६९ जुलाई २१-इन तारीखों की प्रधानता क्या है?
६. हमारे पुराणों की कुबेरपुरि का नाम क्या है?
७. 'फार्मोसा' देश का दूसरा नाम क्या है?
८. कहा जाता है कि रोमन सम्राट के पास एक भारतीय रसोइया रहा करता था । किस सम्राट के पास? रसोइया कौन था?
९. 'सुमो कुश्तियाँ' कहाँ होती हैं?
१०. 'तमाशा' नामक लोकनृत्य हमारे देश के किस प्रांत के हैं?
११. अत्यंत प्राचीन भारतीय वैद्य-ग्रंथ कौन-सा है?
१२. मोटरकारों को बड़े पैमाने पर बनानेवाला देश कौन-सा है?
१३. 'होमियोपति' चिकित्सा-प्रणाली के चिकित्सक कौन थे?
१४. संसार में द्वितीय सुंदर समुद्री तट हमारे देश में है? वह कहाँ है?
१५. आधुनिक ओलंपिक क्रीड़ाएँ पहले पहल कब और कहाँ हुईं?
१६. उत्तर भारत की 'शहनाई' से मिलता-जुलता दक्षिण भारत का कौन-सा वाद्य है?

उत्तर

१. जून ५
२. कृष्णा नदी
३. एबेल टास्मान
४. मेहरसेन, पश्चिम बंगाल, (१९५८)
५. सोवियत यूनियन का यूरी गगारिन का अंतरिक्ष में प्रवेश । अमेरीका के नील आर्म स्ट्रांग ने पहले-पहल चाँद पर क़दम रखा ।
६. अलकापुरी
७. तैवान
८. कान्स्टिंटन सम्राट (६ शताब्दी) जस्टीनियन
९. जापान
१०. महाराष्ट्र
११. चरकसंहिता
१२. अमेरीका
१३. जर्मनी का हहनिमन
१४. मेरीना बीच, मद्रास
१५. ग्रीक का एथेन्स, (१८९६)
१६. नादस्वर

राक्षस का क़िला

शौरि सुंदर युवक था । अक़्लमंद, चुस्त और साहसी था । बचपन में ही उसके माँ-बाप गुज़र चुके थे । उसकी नानी ने ही उसको पाल-पोसकर बड़ा किया । बचपन से ही साहसी शौरि की तीव्र इच्छा थी कि सैनिक बनूँ और राज्य की रक्षा में अपना हाथ बँटाऊँ । लेकिन उसकी नानी को यह कतई पसंद नहीं था ।

वह कहा करती थी कि इस दुनिया में तुम्हारे सिवा मेरे और कौन हैं? इस बुढ़ापे में तुम्ही मेरे एकमात्र सहारे हो । मैं तो किसी भी हालत में तुम्हें सैनिक बनने नहीं दूँगी । सैनिक की ज़िन्दगी खतरों से घिरी हुई है । मालूम नहीं, शत्रु कब आक्रमण कर दे? जब अपने दुश्मन से लड़ोगे तो ज़िन्दगी का क्या भरोसा?"

शौरि ने अपनी नानी को समझाते हुए कहा "नानी, मैं अपने लिए लड़ नहीं रहा हूँ । देश के लिए लड़ूँगा । देश के लिए लड़ते हुए मर भी गया तो क्या हुआ? इससे तो वीर गति प्राप्त होगी । इससे आत्म-तृप्ति तो होगी कि मुझे भी देश की सेवा करने का मौका मिला है । नानी, तुम्हें भी इस बात पर गर्व करना चाहिये कि तुम्हारा पोता एक उत्तम व पवित्र कार्य करने जा रहा है । मेरी बात मान लो और मुझे सेना में भर्ती होने के लिए जाने दो ।"

परंतु नानी ने उसकी एक ना सुनी । शौरि भी नानी की उम्र को दृष्टि में रखते हुए चुप रहा । परंतु सैनिक बनने का उसका निर्णय अटल और दृढ़ था ।

नानी के मरते ही अपनी इच्छा की पूर्ति के लिए वह राजधानी निकल पड़ा । रास्ते में उसे घने जंगल से होते हुए जाना पड़ा ।

जंगल में प्रवेश करने के बाद उसे एक भर्राई हुई आवाज़ सुनायी पड़ी "रुक जाओ! ।

जो क़दम उठाया है, उसे नीचे मत रख ।"
उसने देखा कि बग़ल के एक टीले पर एक कुरूपी आदमी खड़ा था । उसी ने शौरि को रुकने के लिए कहा था । शौरि ने उठाया हुआ अपना क़दम वैसे ही रखा और कुछ कहने ही वाला था कि उस कुरूपी ने कहा "जहाँ, तुम क़दम रखनेवाले हो, ठीक वहीं एक बड़ी चींटी है । प्राण-भय से उसने चीत्कार किया । उस चीत्कार से मेरा दिल दया से पिघल गया है ।"

शौरि ने झुककर देखा तो सचमुच वहाँ चींटी थी ।शौरि ने कहा "इसका तो मुझे विश्वास नहीं होता कि उस चींटी के चीत्कार को तुमने सुना है ।" टीले पर चढ़ते हुए उसने कहा ।

इसपर कुरूपी ने कहा "मेरा नाम ध्वनि है । छोटी-छोटी आहट को भी मैं सुन सकता हूँ ।"

फिर ध्वनि ने दीर्घ श्वास लेते हुए कहा "इस विकृत रूप के कारण सब मेरा अपमान करते हैं । इससे अच्छा तो यही है कि अकेला रहकर इस जंगल में प्रशांत जीवन बिताऊँ । इसीलिए यहाँ रहता हूँ ।"

शौरि ने बड़े प्यार से उसकी पीठ थपथपायी और कहा "तुमने अपराध नहीं किया है । फिर भी अपने आप दंड भुगत रहे हो । मैं सैनिक बनकर देश की सेवा करना चाहता हूँ । इसीलिए राजधानी निकल पड़ा हूँ । तुम्हारी भी सेवाओं की ज़रूरत देश को है । तुम भी मेरे साथ चलो ।"

ध्वनि ने 'हाँ' कहा, उसके साथ चल पड़ा । दुपहर के समय उन्हें प्यास लगी तो दोनों पानी के लिए ढूँढ़ने लगे तो पथ्थरों से भरे एक टीले से उन्हें आवाज़ सुनायी पड़ी "कड़ी धूप है । थोड़ी देर यहाँ विश्राम करके जाओ ।"

जिस आदमी ने ये बातें कही थीं, वह ध्वनि से भी भद्दा था । उसके दिये हुए पानी को पीकर दोनों ने अपनी प्यास बुझायी ।

"अपने कपड़ों के पीछे कमर में तुमने पैसों की थैली बाँध रखी है । उस थैली की एक गाँठ खुल गयी है । और एक गाँठ खुल जाए तो पैसों की थैली नीचे गिर जायेगी ।" उस भद्दे आदमी ने कहा ।

शौरि ने उससे पूछा "कपड़ों के पीछे बंधी

पैसों की यह थैली तुम्हें कैसे दिखायी पड़ी?"

"मेरा नाम दृष्टि है । दीवार की उस तरफ़ की वस्तुओं को भी मैं देख सकता हूँ" उस भद्दे आदमी ने कहा ।

शौरि को इसपर बड़ा आश्चर्य हुआ और उसने उससे कहा "बहुत अच्छा । तुम्हारे पास इतनी उपयोगी कला है, परंतु क्या लाभ? इससे देश का कोई उपयोग नहीं होता । तुम भी हमारे साथ राजधानी आओ और देश की सेवा में हाथ बँटाओ ।" दृष्टि भी उनके साथ-साथ चल पड़ा ।

वे तीनों जब जा रहे थे, तब ध्वनि ने यह कहते हुए उन्हे रोका "ठहरिये, बाघ के आने की आवाज़ सुनाई पड़ रही है ।लगता है, वह पास ही है ।" कहकर आगे बढ़ते हुए शौरि, ध्वनि और दृष्टि को उसने रोक दिया ।

बाघ झाड़ियों से बाहर आकर उनपर झपटने को तैयार ही था कि इतने में एक चट्टान उस बाघ पर आ गिरा । उस चोट से बाघ नीचे गिर गया और रक्त-सिक्त होकर ज़मीन पर लोटने लगा ।

तीनों आश्चर्य में डूब गये । शौरि ने सिर उठाकर देखा तो देखा कि एक बेड़ौल आदमी वहाँ खड़ा था । शौरि ने अपने प्राणदाता को संबोधित करते हुए कहा "देखने में बहुत ही बलहीन लग रहे हो । इतने बड़े चट्टान को उस बाघ पर कैसे गिरा पाये?"

उस बेड़ौल आदमी ने ठाकर हँसते हुए कहा "पुछते हो, कैसे? अपनी इन आँखों

से । अपनी आँखों को इशारा कर हूँ तो बस, बड़े से बड़ा चट्टान भी, जहाँ मैं चाहूँगा, वहाँ गिरेगा । मेरा नाम है शक्ति ।"

"तब तो तुम्हें हमारे साथ आना ही होगा ।" शौरि ने अपने वाक-चातुर्य से उसे भी मना लिया और शक्ति को भी लेकर राजधानी की ओर चल पड़ा ।

चारों अंधेरा होते-होते एक ऊँचे पहाड़ के निकट पहुँचे । उस पहाड़ पर एक पुराने ज़माने का एक क़िला था ।

पहाड़ के नीचे की गुफ़ा को दिखाते हुए दृष्टि ने कहा "आज रात को यहीं आराम करेंगे ।"

"गुफ़ा में हवा नहीं आती । आज रात को पहाड़ पर स्थित उस क़िले में विश्राम

करेंगे" शौरि ने कहा ।"

चारों पहाड़ पर चढ़े । किले का मुख्य द्वार बंद था । द्वार के ऊपर हज़ारों चमगीदड़ लटक रहे थे । शौरि ने द्वार को जैसे ही ज़ोरसे पीटा, चमगीदड़ इधर-उधर उड़ पड़े ।

किले में क्या है, यह सब दृष्टि देख पा रहा था । एक बूढ़ा राक्षस झुकी कमर लिये धीरे-धीरे चला आ रहा था । दरबाज़े के बगल की एक सुराख से उसने सींगे और नाखून निकाले और पहन लिया ।

दृष्टि ने यह देख लिया और बाकी तीनों से कहा "एक बूढ़ा राक्षस नकली सींग डाले दरवाज़ा खोलकर बाहर आनेवाला है । नकली हुआ तो क्या, राक्षस, राक्षस ही होता है । क्या हम लोग भाग चलें?" इतने में राक्षस दरवाज़े के पास आया और बोला "अरे ओ मनोहर रूप वाले मेरे लाड़ले, क्या तुम्हींने दरवाज़ा खटखटाया है?"

फ़ौरन शौरि ने कहा "ऐ भले राक्षस, दरवाज़ा खोलिये, आपके लाड़ले ने ही हमें यहाँ भेजा है ।"

राक्षस ने बड़ा आतुर हो दरवांज़ा खोला और पूछा "मेरा लाड़ला कहाँ है? वह यहाँ कब आयेगा? क्या अब भी मुझ पर वह नाराज़ है?" यों प्रश्नों की बौछार करने लगा ।

शौरि ने कमज़ोरी का नाटक करते हुए कहा "सबेरे-सबेरे निकले हैं । बिना कहीं रुके दस कोसों की यात्रा की है । तब जाकर आकाश को छूनेवाले आपके किले तक पहुँच पाये हैं । थक गये हैं, नींद आ रही है । ड़र लगता है कि कमज़ोरी की वजह से हम कहीं धड़ाम् से नीचे गिर ना जाएँ । आज रात को यहाँ विश्राम करेंगे । कल सबेरे आपके लाड़ले की सब बातें विशद रूप से सुनाएँगे ।"

शौरि के जवाब से राक्षस संतुष्ट हुआ । उसने उन्हें खाने के लिए टोकरी भर फल दिये । पीने के लिए ताँबे के भरे बड़े वरतन में पानी दिया । दरवाज़े के पास ही के कमरे में सोने का प्रबंध भी किया । और कहा "अच्छी तरह सो जाओ । भूलकर भी किले के अंदर पैर मत रखना । बूढ़ा हूँ । इसलिए तुम लोग इस ग़लतफ़हमी में मत रहो कि ये सींग, ये नाखून आदि नक़ली हैं । आप

लोग अपनी हदें पार कर गये तो खड़े-खड़े ही भून डालूँगा" कहकर वह ज़ोर से अपने दांत चबाने लगा । दर्द से कराह उठा और अपने गालों को पकड़ता हुआ अंदर चला गया ।

थोड़ी देर बाद उसके खर्राटों से किला प्रतिध्वनित हो उठा ।

ध्वनि ने राक्षस के खर्राटे की आवाज़ सुनी । उसे और भी कुछ सुनने में आया तो उसने चुटकी बजाते हुए कहा "इसके खर्राटे की भयंकर ध्वनि के साथ-साथ मुझे एक स्त्री का रोदन भी सुनाई पड़ रहा है ।"

शौरि तुरंत उठा और सब कमरों को पार करता हुआ आखिरी कमरे में पहुँचा ।

उस कमरे की खिड़की के पास वह खड़ा हो गया और उसने देखा कि एक सुँदर कन्या चाँदनी को देख रही है और रोये जा रही है । वह चुपचाप उसके पास पहुँचा । उसके पहने हुए कपड़े, गले में डाले हुए मोतियों का हार तथा अन्य अलंकारों को देखते हुए लग रहा था कि वह अवश्य ही कोई राजकुमारी है ।

शौरि को देखते ही वह भय से काँप उठी । शौरि ने बड़ी ही मृदुता से उससे कहा "ड़रिये मत । आप कौन है? आप की सहायता के लिए ही यहाँ आया हूँ ।"

धीरज बाँधती हुई वह कन्या बोली "मैं इस राज्य की राजकुमारी हूँ । नाम है रति । चार दिनों के पहले मैं अपनी सहेलियों के साथ पडाड़ के ऊपर के मंदिर में पूजा करने आयी भी । राक्षस ने मुझे पकड़ लिया और आकाश मार्ग में मुझे इस किले में लाकर
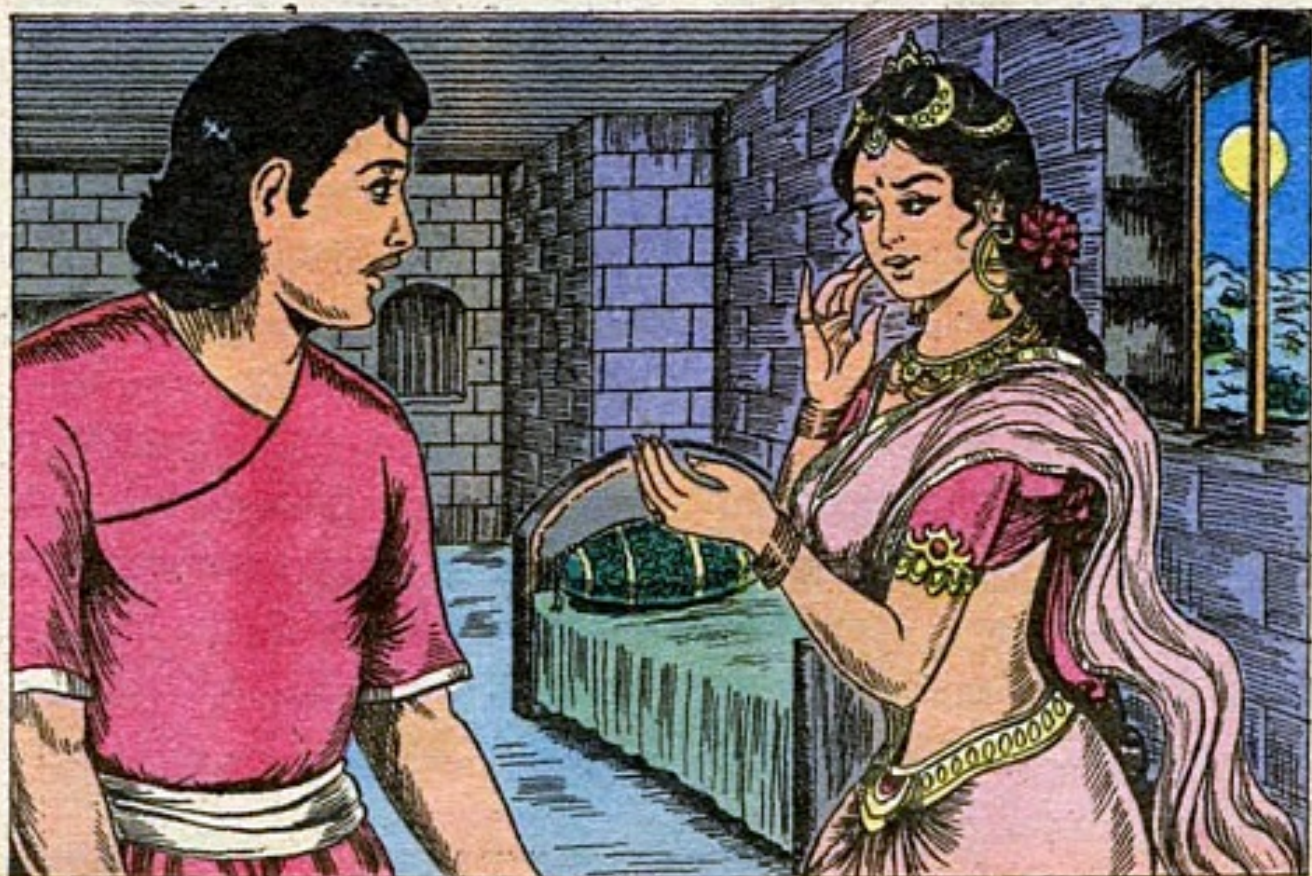
बंद कर दिया । वह कहता है "मेरा बेटा मन्मथ की तरह मोहक रूप वाला है । वह हठ करता है कि अगर शादी करूँगा तो किसी राजकुमारी से ही करूँगा ।" परंतु बूढ़ा राक्षस नहीं चाहता कि उसके बेटे की शादी किसी राजकुमार से हो । उसकी तो यही तीव्र इच्छा है कि ऐसी बहू आये, जो उसे स्वादिष्ट मॉसाहार खिलाये, खूब मेहनत करे । इस विषय को लेकर पिता और बेटे में झगड़ा हुआ । वह मन्मथ कहीं चला गया ।

"अपने इकलौते बेटे का बिछोह राक्षस से सहा नहीं गया । इसीलिए राजकुमारी को याने मुझे उठा ले आया । वह चाहता है कि बेटा जैसे ही वापस आयेगा, मेरी शादी उससे करा दूँ ।"

शौरि ने सब कुछ सुना और जाना । उसने राजकुमारी को आश्वासन दिया "भयभीत ना होना । सूर्योदय के साथ-साथ इस राक्षस से आपको मुक्ति दिलाऊँगा ।" फिर वह उन तीनों कुरूपियों के पास आया ।

सुबह होते ही बूढ़ा राक्षस भूलकर बिना सींगों व नाखूनों के उनके पास आया और बोला "मेरा लाड़ला बेटा कहाँ है? तुमसे क्या बताया है?. बोलो ।"

शौरि ने झुककर राक्षस को नमस्कार किया और कहा "ऐ राक्षसोत्तम, अपने पुत्र के शोक में रात ही रात सींग और नाखून गायब हो गये हैं ।आपका पितृप्रेम सराहनीय है ।"

राक्षस ने अपने सिर को टटोलकर देखा तो उसे मालूम हो गया कि वहाँ सींगें नहीं है, हाथ देखे तो नाखून नहीं हैं तो वह एकदम घबड़ा गया । पर दूसरे ही क्षण झूठा क्रोध जताते हुए बोला "तुम्हें और तुम्हारे इन भद्दे मित्रों को क्षमा करके छोड़ रहा हूँ । क्योंकि, तुम मेरे लाड़ले पुत्र के मित्र हो । अब बोलो, मेरा बेटा कहाँ है?" वह हुँकारते हुए उन्हें डॉटना चाहता था, पर उसके बदले खाँसने लगा ।

शौरि ने कहा "आपका बेटा जानना चाहता है कि उसकी शादी आप राजकुमारी से करेंगे या नहीं । उसने यह राज़ जानने के लिए हमें यहाँ भेजा है । अगर राजकुमारी से उसकी शादी नहीं कराएँगे तो उसने कहला भेजा है कि वह बीच समुँदर में डूबकर अपनी जान दे देगा ।"

यह सुनते ही राक्षस ने अपने कान बंद करते हुए कहा "अशुभ बातें मत कर । उसके लिए राजकुमारी को लाकर क़िले में बंद कर रखा है । मेरे मनोहर रूपवाले बेटे से बोलो कि वह तुरंत यहाँ आये ।"

"अगर यह बात मालूम होती तो कल रात ही वह यहाँ आया होता । पहाड़ के नीचे की गुफ़ा में पथ्थरों कर सोने की तकलीफ़ से बचता" शौरि ने कहा ।

"क्या कहा? मेरा बेटा पहाड़ के नीचे की गुफ़ा में है?" कहता हुआ बूढ़ा राक्षस खुशी-खुशी पहाड़ से नीचे उतरने लगा । उसके पीछे-पीछे शौरि और उसके तीनों दोस्त भी नीचे उतरे । ताली बजाते हुए राक्षस जब गुफ़ा में गया तब शौरिने शक्ति को इशारा किया । उसने आँखों से इशारा क्या किया, एक बड़े चट्टान से गुफ़ा का द्वार ढ़क गया ।

तब चारों राजकुमारी के पास गये और उससे उसकी विमुक्ति का समाचार सुनाया । राजकुमारी ने जब पूछा तो शौरि ने अपने बारे में सब कुछ बताया और यह भी बताया कि घर से निकलने का उसका क्या उद्देश्य है ।

सब कुछ सुनकर राजकुमारी आश्चर्य प्रकट करती हुई बोली "लगता है, यह सब एक सपना है । एक राजा में जो अकलमंदी, साहस, सुँदरता तथा समय-स्फूर्ति होने चाहिये, वे सब तुममें मौजूद हैं" कहती हुई लज्जा से उसने अपना सिर झुका लिया ।

फिर पाँचों पहाड़ से उतरकर नीचे आ रहे थे तो ध्वनि ने उनको रोका और कहा
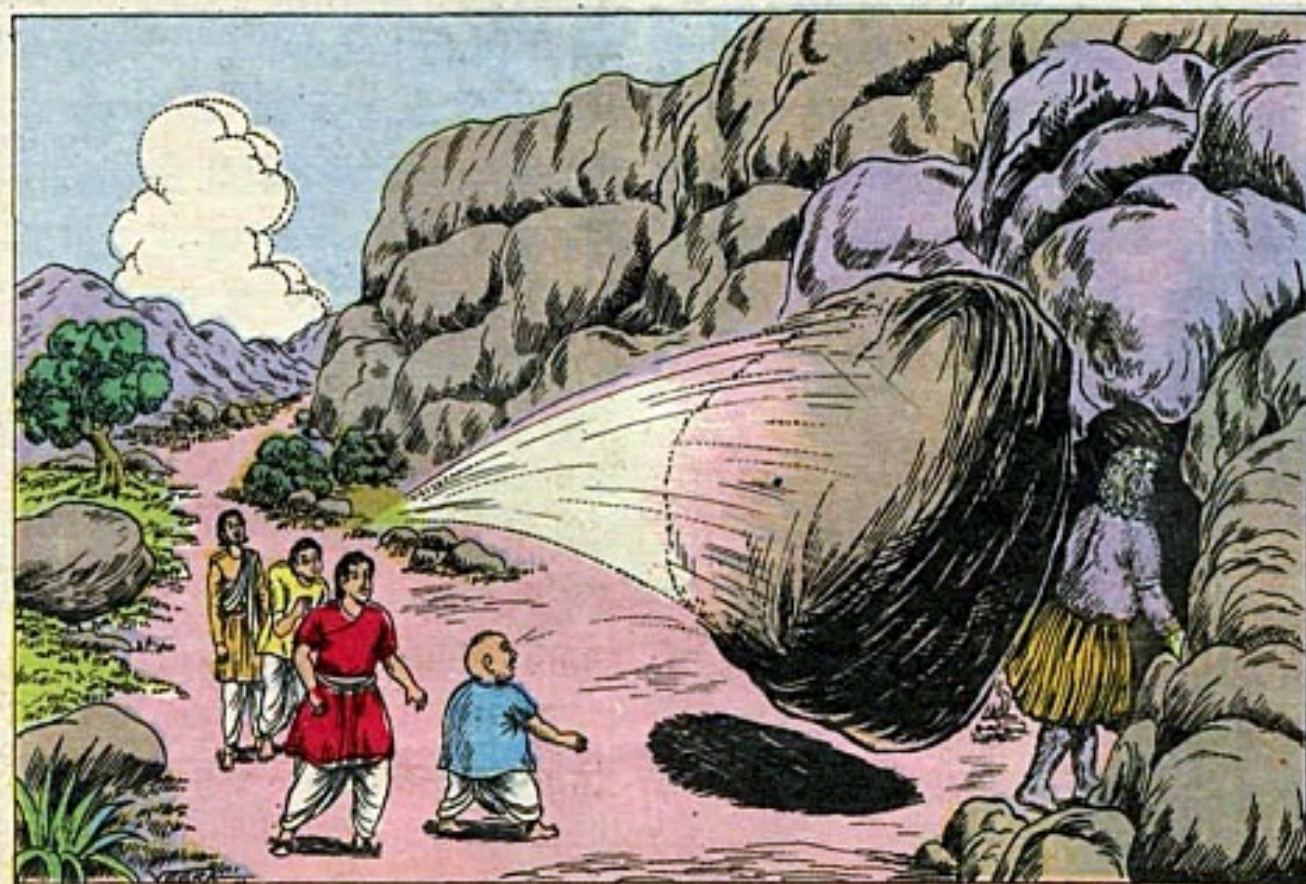
"हाथी के आने की आवाज़ सुनायी दे रही है ।"

शक्ति ने यह सुनते ही कहा "हाथियों से मैं बहुत ड़रता हूँ । अरे दृष्टि, ज़रा बत्ता तो सही, वह कहाँ है? एक चट्टान गिराकर उसके कुँभस्थल को तोड़ डालता हूँ ।"

दृष्टि ने उस तरफ़ देखा और कहा "आनेवाला वह हाथी पालतू है । उसके ऊपर जो अंबारी है, उसपर एक आदमी बैठा हुआ है । उसके सिर पर लाल पगड़ी है । उसकी छोटी -छोटी सफ़ेद मूँछें हैं । बग़ल में अश्वारूढ़ होकर भाले हाथ में लिये हुए कुछ सैनिक हैं । उसके पीछे ढ़िढ़ोरा पीटते हुए कुछ लोग भी आ रहे है ।"

राजकुमारी ने फ़ौरन बताया "तब तो वे महामंत्री अभयवर्मा होंगे । उन्हें यहाँ आने की क्या ज़रूरत आ पड़ी?"

तब तक मौन धारण किये हुए शौरि ने कहा "राजकुमारी, अब हमें जाने की अनुमति दीजिये । अब अपने मंत्री के साथ अपना नगर बेरोकटोक पहुँच सकती हैं । मैं और मेरे दोस्त राजधानी जाएँगे । मुझे उम्मीद है कि राजा के दरबार में अवश्य ही मुझे नौकरी मिलेगी । उसके बाद अपने इन शक्तिशाली मित्रों के लिए भी नौकरी ढूँढूँगा ।"

राजकुमारी ने झूठी नाराज़ी से शौरि को देखा । फिर पेड़ों से निकलती हुई हाथी की ओर तेज़ी से चली गयी । पंद्रह मिनिटों के अंदर मंत्री अभयवर्मा वहाँ आया । हाथी से उतरा और शौरि के पास आकर उसके हाथ पकड़ते हुए बोला "देशभक्ति तुममें कूट-कूटकर भरी हुई है । इसीलिए तुमने सैनिक बनने की ठानी है । तुम राजकुमारी से विवाह करोगे और हमारे महाराज के बाद तुम्हीं इस देश के राजा बनोगे । तुमने राक्षस पर ही विजय नहीं पायी है, बल्कि हमारी राजकुमारी के हदय को भी चुराया है । इसलिए भविष्य में तुम ही इस राज्य के राजा हो ।"

वीर हनुमान

मणिपुर राज्य का शासक मणिध्वज केवल पराक्रमी ही नहीं था बल्कि उत्तम कोटि का शिवभक्त भी था । वह सौ बार यज्ञके के हवन कुंड में अपने शरीर की आहुति दे चुका था । दस बार अपना शीश काटकर शिव के चरणों में अर्पित कर चुका था । इस प्रकार की अनेकों उग्र पूजाएँ उसने की और शिव का साक्षात्कार किया । हर बार शिव भगवान से वह वर पाता रहा । मणिध्वज सच्चे अर्थों में शिव का परम भक्त था ।

जब वह चाहेगा तब शिव का त्रिशूल उसकी सहायता के लिए आयेगा और शत्रु-संहार करेगा । पाशुपतास्त्र भी उसे प्रदान किया गया था । शिव ने उसे वर भी दिया था कि जब वह चाहेगा, स्वयं वे आयेंगे और शत्रुओं का संहार करेंगे। हर संकट के समय वे उसका साथ देंगे और उसकी रक्षा करेंगे । अब उसे संपूर्ण विश्वास हो गया कि मैं किसी भी के हाथों पराजित नहीं होऊँगा ;कोई भी शत्रु मेरा कुछ नहीं बिगाड़ सकता, क्योंकि परमशिव ही मेरे रक्षक हैं । इस कारण मणिध्वज के गर्व की सीमा ना रही । निरंकुश हो वह अपना शासन निराटंक चलाने लगा ।

शिव को छोड़कर जो-जो अन्य भगवानों में विश्वास रखते थे, अन्य धर्मों का अनुसरण करते थे, वे देश से निकाले गये । जो बचे-खुचे थे उन्हें तरह-तरह से कष्ट पहुँचाये जाने लगे। शिव-मंदिरों को छोड़कर

राज्य में जितने और मंदिर थे, सबका ध्वंस कर दिया गया ।

मणिध्वज के हाथों जिन-जिन्होंने बाधाएँ सहीं, वे सब के सब शरणार्थी बनकर अयोध्या पहुँचे और श्रीराम को अपनी दुख-गाथाएँ सुनायीं । श्रीराम ने उन्हें अभय दिया और कहा कि मणिध्वज के अहंकार का नाश निकट भविष्य में ही होगा और शीघ्र ही उनके दुख भी दूर होंगे । श्रीराम ने उनसे कहा, तब तक आप सब लोग मेरे राज्य में ही रहें । यों वे सब राम के राज्य में अपना जीवन-काल व्यतीत कर रहे थे ।

स्वच्छंदता से घूम-घूम कर आये हुए राम के यज्ञ के अश्व ने जैसे ही अपना पहला पग उसके राज्य में रखा, वैसे ही मणिध्वज ने उसे पकड़वाया और अपनी राजधानी मणिपुर की अश्वशाला में बंधवा दिया । उसे इस बात का अपार हर्ष था कि राम जैसे राजा के अश्व को मैने बंदी बना दिया है ।

लक्ष्मण ने मणिध्वज को दूत के द्वारा समाचार भिजवाया कि वह अश्व को छोड़ दे और राम के प्रति अपनी मित्रता प्रकट करे । मणिध्वज ने जले त्रिशूल से दूत की पीठ पर निशान लगा दिया और कहा "राम ने रावण जैसे महान शिवभक्तों का वध किया है । ऐसे उस राम को मैं टुकड़ों में काटकर भैरव के चरणों में समर्पित करने केलिए लालायित हो रहा हूँ । करोड़ों राम भी आयें तो क्या हुआ? मेरी शूरता के सम्मुख वे टिक नहीं पायेंगे । मेरे हाथों उसका वध निश्चित है । जो भी आये, कह देना कि उसपर इस त्रिशूल की ऐसी ही छाप लग जायेगी । जाकर कह दो अपने लक्ष्मण से कि मणिध्वज ने ये बाते स्वयं कही हैं" कहते हुए उस दूत के सिर पर टोकरी भर का भस्म ड़लवा दिया । निस्संदेह उसका दर्प, अहंकार उसे अंधा बना रहे थे ।

अब तक किसी भी राजा से कोई संघर्ष नहीं हुआ । निराटंक राम का अश्व आगे बढ़ता हुआ आया । अब लक्ष्मण और भरत को लगा कि मणिध्वज से युद्ध अवश्यंभावी है ।

भरत ने पंचजन्य जैसे शंख की ध्वनि से दिशाओं को प्रतिध्वनित किया । शत्रुघ्न

सुदर्शन चक्र की तरह व्याप्त होने लगा । शतफन फैलाकर फुफकारते हुए शेषनाग की तरह बढ़ते हुए लक्ष्मण के वेग के सामने मणिध्वज अपने को संभाल नहीं सका । उसने शिव के त्रिशूल को अपनी रक्षा के लिए बुलाया ।

तब मणिध्वज के पूजा-मंदिर से बिजली की तरह कड़कता हुआ बृहत आकार का एक त्रिशूल लक्ष्मण से टकराता हुआ गया ।

ठीक उसी समय पर हनुमान वहाँ आया था । उसने वेग से लक्ष्मण की ओर बढ़नेवाले त्रिशूल को देखा और उसे बायें हाथ से ऐसा पकड़ लिया मानों हाथी ने अपनी सूँड़ से गन्ना पकड़ लिया हो । वह अब गंभीर आकृति लिये शिव की ही तरह खड़ा हो गया ।

मणिध्वज आश्चर्य से उस आकृति को देखने लगा । क्षण भर के लिए उसे लगा कि स्वयं शिव प्रत्यक्ष हुए हैं और वह भक्ति से हाथ जोड़कर प्रणाम करने ही वाला था कि हनुमान हँस पड़ा और बोला "अरे ओ शिवभक्त, मैं शिव नहीं हूँ । एक बंदर हूँ । हनुमान । राम का सेवक हूँ । जान गये हो ना?" कहकर गदा हाथ में ली और उसपर आक्रमण कर दिया ।

मणिध्वज ने उस आक्रमण से अपनी रक्षा कर ली और दूर भागा । हनुमान को देखकर वह पानी-पानी हो गया ।

हनुमान का जटा-जूट हवा में उड़ रहा था । आँखें आग की गेंदों की तरह भयंकर रूप से प्रकाशित हो रही थीं । वह त्रिशूल को भूमि पर टिकाकरहाथ में लिये खड़ा था ।

लगता था, स्वयं महेश्वर खड़े हुए हैं । भयभीत मणिध्वज को लगा कि मृत्यु निश्चित है । कोई और मार्ग उसे दिखाई नहीं दे रहा था । अकस्मात उसे पाशुपतास्त्र का स्मरण आया और उसने तक्षण मंत्र का जप किया । जैसे ही पाशुपतास्त्र उसके हाथ आया, उसने उसे हनुमान पर छोड़ा ।

पाशुपतास्त्र की उष्णता के कारण वह समस्त प्रदेश गरम हो गया । लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न और उनकी संपूर्ण सेना मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ी ।

हनुमान राम नाम का जप करता रहा और वक्षस्थल तानकर अस्त्र के सम्मुख गया । पाशुपतास्त्र हनुमान के वक्षस्थल को छूता हुआ गया और हनुमान में लीन हो गया । हनुमान ने मणिध्वज के रथ को तोड़ ड़ाला और गदा लेकर उसे मारने उसपर टूट पड़ा ।

मणिध्वज घायल तो हुआ, पर मरा नहीं । अपने को बचाते हुए दौड़े-दौड़े पूजा-मंदिर में गया और शिवलिंग से अपना सिर फोड़ने लगा । वह चिल्लाता जा रहा था "हर हर महादेव, आओ, आ जाओ, रक्षा करो ।"

"यह क्या हो गया मणिध्वज? कह रहे थे ना कि करोड़ों राम भी आयें तो मेरा क्या कर लेंगे । राम के एक सेवक का भी सामना नही कर पाये? युद्ध करो । मैं तुम्हारा साथ दूँगा" शिवलिंग सेउसे ये वचन सुनायी पड़े ।

अपने भक्त को दिये हुए वचन के अनुसार नंदिवाहन पर बैठकर शिव युद्धक्षेत्र में आये और अपने भक्त मणिध्वज के सम्मुख प्रकट हुए ।

हनुमान ने शिव से कहा "हो सकता है, आप भगवान हों, परंतु मैं किसी की परवाह नहीं करता । मेरे वार से अपनी रक्षा कीजिये" कहकर शिव पर टूट पड़ा ।

नंदि घवरा गया और शिव को गिराकर भाग गया । शिव उठे और हनुमान से बोले "मेरे त्रिशूल को पकड़ लिया । पाशुपतास्त्र को अपने में लीन कर लिया । केवल विष्णु भगवान के लिए ही यह साध्य है । तुम विष्णु हो अथवा विष्णु के भक्त हो? बोलो, कौन हो?"

"किसी भी भगवान से मेरा कोई संबध नही । मानव मात्र राम पर ही मैं विश्वास

रखता हूँ। इस वानर का वही भगवान है। बुद्धि भी वानर की तरह अति चंचल है। किन्तु मैने अपनी बुद्धि को उस उत्तम पुरुषोत्तम पर केंद्रित किया है। इससे असीम मनोबल, धैर्य-साहस आदि मुझे प्राप्त हुए हैं। इसे भक्ति कहिये या लक्ष्य-सिद्धि, दोनों एक ही नाम के दो रूप हैं। जिस मानव पर मेरा अचंचल व स्थिर विश्वास है, वे लोक-कल्याण के लिए अश्वमेध यज्ञ कर रहे हैं। उसकी सफलता को किसी भी भगवान की भक्ति भी रोक नहीं पायेगी। अपने को भक्त कहकर मणिध्वज जैसा दुरहंकारी घोर पाप कर रहा है। ऐसे दुरहंकारी, स्वार्थी, पापी, अत्याचारी, निरंकुश व्यक्ति का साथ देनेवाले, आपका होना या ना होना दोनों समान हैं।" हनुमान ने अपने अभिप्राय बिना किसी संकोच तथा झिझक के स्पष्ट-स्पष्ट कह दिया।

उसकी इन बातों पर शिव हँस पड़े और बोले "अच्छा, तो ठीक है। अब मैं अपनी तीसरी आँख खोल रहा हूँ। अपनी रक्षा करो।"

"शीघ्र खोलिये। अपने भक्त की बंद आँखें भी खोलिये।" हनुमान ने कहा।

शिव ने जैसे ही अपनी तीसरी आँख खोली, उसकी ज्वाला हनुमान पर लपकती हुई आयी। हनुमान ने अपना दायाँ हाथ खोला और उस अग्नि को अपनी मुट्ठी में बंद कर लिया। एक बार जिस प्रकार शिवने हलाहल पिया था उसी प्रकार 'रामार्पणमस्तु' कहते

हुए उस अग्नि को मुँह में ड़ाला और निगल गया।

शिव ने मणिध्वज से कहा "देख रहे हो ना? अब मैं और कुछ नहीं कर सकता। हनुमान कोई और नहीं, मेरा आत्मस्वरूप ही है। मेरे ही अंशों से उसका जन्म हुआ है, इसलिए मेरी समस्त शक्तियाँ उसमें लीन हो गयी हैं। उससे सीखो कि सच्ची भक्ति क्या होती है?"

बात ही बात में हनुमान वायुवेग से उड़कर द्रोणगिरि गया और संजीवनी को उखाड़कर ले आया। बेहोश लक्ष्मण, शत्रुघ्न, भरत तथा सेना को बचा लिया।

मणिध्वज के ज्ञान-चक्षु अब खुल गये। हनुमान के सामने उसने घुटने टेके और

अब तुम्हारा अज्ञान दूर हो गया है, इसलिए द्वेष, अहंकार, दर्प आदि दुर्गुण छोड़ो और जानो कि भगवान सब में हैं, सबके हैं, सर्वत्र हैं। भविष्य में प्रजा का कल्याण ही अपना आदर्श जानो और उत्तम भक्त की तरह राज्य-पालन करो।"

मणिध्वज ने कहा "हे आँजनेय, गर्व अधिक हो जाए और उसका भंग हो जाए, तभी ज्ञान उत्पन्न होता है। मैं घमंडी बना, शिव से प्रदत्त वरों के कारण। अब मुझमें ज्ञान का उदय हो गया है। दर्प से अंधा होकर जिस यागाश्व को मैने बाँधा, इससे मेरा भला ही हुआ। मुझमें अब ज्ञानोदय हुआ है। मैं स्वयं श्रीराम के पास जाकर क्षमा-याचना माँगूँगा। उनसे प्रार्थना करूँगा कि वे मुझे भी अपने बंधुओं में से एक मानें।" फिर उसने अश्वशाला में बंधे हुए अश्व को लक्ष्मण के सुपुर्द किया।

अश्व अब स्वच्छंद छोड़ दिया गया और सब लोग उसके पीछे-पीछे जाने लगे। मणिध्वज ने उनको हार्दिक बिदाई दी।

मणिध्वज की शुभा, शोभा, नामक दो पुत्रियाँ थीं। वे भी जुड़वीं थीं। उनको लेकर मणिध्वज अयोध्या गया और श्रीराम से क्षमा-भिक्षा माँगी।

राम ने मणिध्वज का मित्र की तरह आदर किया। मणिध्वज ने श्रीराम से प्रार्थना की कि वे उसकी पुत्रियों को बहुओं के रूप में स्वीकार करें। राम ने उसकी प्रार्थना स्वीकार की और कहा कि यह विवाह अश्वमेध यज्ञ

सविनय प्रणाम किया।

हनुमान ने उससे कहा "मणिध्वज, देखा, स्वार्थ से लिपटी हुई तुम्हारी भक्ति कितनी क्षुद्र हो गयी? अपने प्रयोजनों के लिए भगवान की आराधना करना और उसे अपना सेवक बनाना भक्ति नहीं कहलाती। ईश्वर का तो यह संकल्प होता है कि समस्त जीव सुरक्षित हों, समुचित हों, सुव्यवस्थित हों, अनुशासित हों, और उसके इस संकल्प को पूरा करना ही भक्त का कर्तव्य है, उसका लक्ष्य है, उसका आदर्श है। तुम जैसे लोगों के कारण भगवानों की भी निंदा होने लगी है। भक्त कहलाये जानेवाले स्वार्थी, अहंकारी, तामस गुणों से भरे व्यक्तियों को देखकर अच्छे लोग भी नास्तिक बन रहे हैं।

की पूर्ति के उपरांत संपन्न होगा ।

मणिध्वज उन सब को अपने राज्य में ले गया, जिन्हें उसने शिवभक्त ना होने के कारण राज्य से निकाल दिया था । प्रजा का कल्याण ही अब उसकी शिवपूजा है । प्रजा की सेवा ही उसकी अब दैव-भक्ति है ।

श्रीराम का यागाश्व पूरब से दक्षिण, उत्तर व पश्चिम बेरोकटोक भ्रमण करता हुआ अयोध्या लौटा ।

अश्वमेध याग की समाप्ति पर किष्किंधा से सुग्रीव आदि वानर, लंका से विभीषण आदि, मणिपुर से मणिध्वज आदि तथा अनेकों देशों से कितने ही राजा और बंधु आये । अपने साथ उत्तम पुरस्कार भी ले आये ।

विभीषण लंका से मूल्यवान मोती, हीरे, जवाहरात गाड़ियों में ले आया । सुग्रीव हीरे और सोना ले आया । मणिध्वज रत्न तथा वस्त्र ले आया ।

देश-देशों से लाये गये चाँदी, सोने, हीरे, जवाहरातों, रत्नों आदि से खज़ाना भर गया । उनके ढ़ेर लग गये ।

लक्ष्मण, भरत, शत्रुघ्न का सब देशों में भव्य स्वागत हुआ । वे दिग्विजयी होकर अयोध्या लौटे ।

उनके पीछे-पीछे हनुमान भरद्वाज, गौतम, अत्रि, अगस्त्य आदि ऋषियों के साथ आया । राम के अस्त्र-गुरु विश्वामित्र का विशिष्ट रूप से आह्वान किया और उन्हें भी बुला लाया ।

अश्वमेध याग की समाप्ति बहुत ही बड़े स्पर पर संपन्न हुई । श्रीराम ने धन-धान्य घर-घर पहुँचाया । राज्य की पुण्यस्त्रीयों में आभूषण, रत्न, सोना आदि बाँटे । प्रजाहित करनेवाले महानुभावों का सम्मान किया ।

तदुपरांत मणिध्वज के आह्वान पर सब मणिपुर गये । मणिपुर में लव का शुभा के साथ, कुश का शोभा के साथ वैभव से विवाह संपन्न हुए । विवाह के समय मणिध्वज ने लव, कुश को अपना संपूर्ण राज्य पुरस्कार में दिया । इसके चंद दिन बाद तपस्या करने स्वयं जंगल चला गया ।
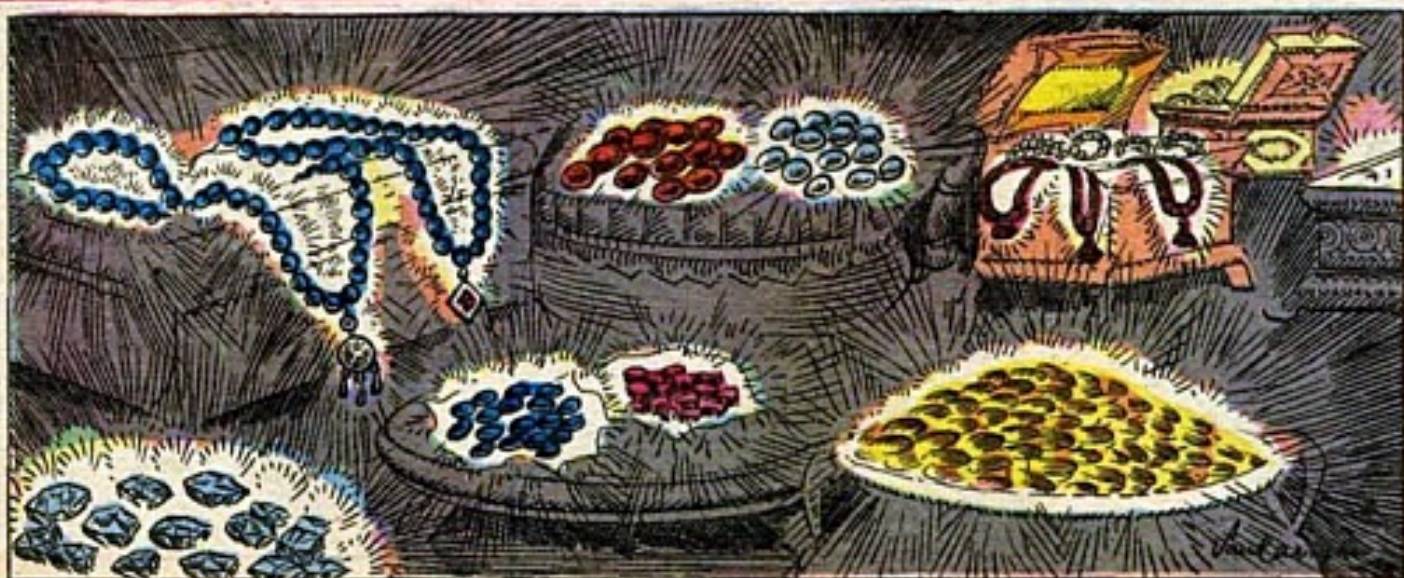
अहंकार

रामपूर का ज़मींदार नरेंद्र नेक आदमी है । किसी भी काम में जल्दबाज़ी नहीं करता । उसकी ज़मींदारी के कामों को संभालने के लिए चार प्रधान कर्मचारी हैं । हर प्रधान कर्मचारी के अधीन पच्चीस नौकर काम करते हैं । ज़मींदार को मालूम पड़ा कि कुछ प्रधान कर्मचारी अपने अधीन काम करनेवाले नौकरों से निजी काम करवा रहे हैं, जिसकी वजह से ज़मींदारी संबंधी काम पिछड़ गये हैं ।

नरेंद्र ने पहले इस बात का विश्वास नहीं किया । उसने उनपर कड़ी निगरानी रखी और मालूम किया कि आरोप सच हैं । उसने यह बात अपनी माता से कही और कहा कि मैं उन चारों को नौकरी से निकाल दूँगा ।

नरेंद्र की माता ने उसके इस निर्णय को नहीं माना । उसने कहा "वे चारों उम्र में तुमसे बड़े हैं । वे हमारे परिवार के विश्वास पात्र नौकर हैं । वे ग़लती करते तो भी तेरे पिता उनसे कुछ कहते नहीं थे । उनके दिलों को बिना दुखाये उन्हें सही मार्ग पर ले आ सकते हो तो ठीक है, नहीं तो चुप रह जाओ । ये प्रधान कर्मचारी हमारे प्रति विश्वासपात्र रहें, तो यही काफ़ी है । अगर वे काम ठीक तरह से नहीं करेंगे तो इससे कष्ट लोगों को होगा । तेरे पिताजी हमेशा कहा करते थे कि लोगों पर आवश्यकता से अधिक ध्यान देना भी ठीक नहीं ।" यों अपने बेटे को उसने सलाह दी ।

नरेंद्र को माँ का यह उपदेश सही नहीं लगा । माता की बात के विरुद्ध कुछ कर बैठना भी उसे अच्छा नहीं लगा । इसलिए उसने प्रधान कर्मचारियों पर कोई कार्रबाई नहीं की । सिर्फ़ एक बार उसने उन्हें बुलाया और इतना ही बताया "ज़मींदारी के कामों में ढ़िलाई आ गयी है ।
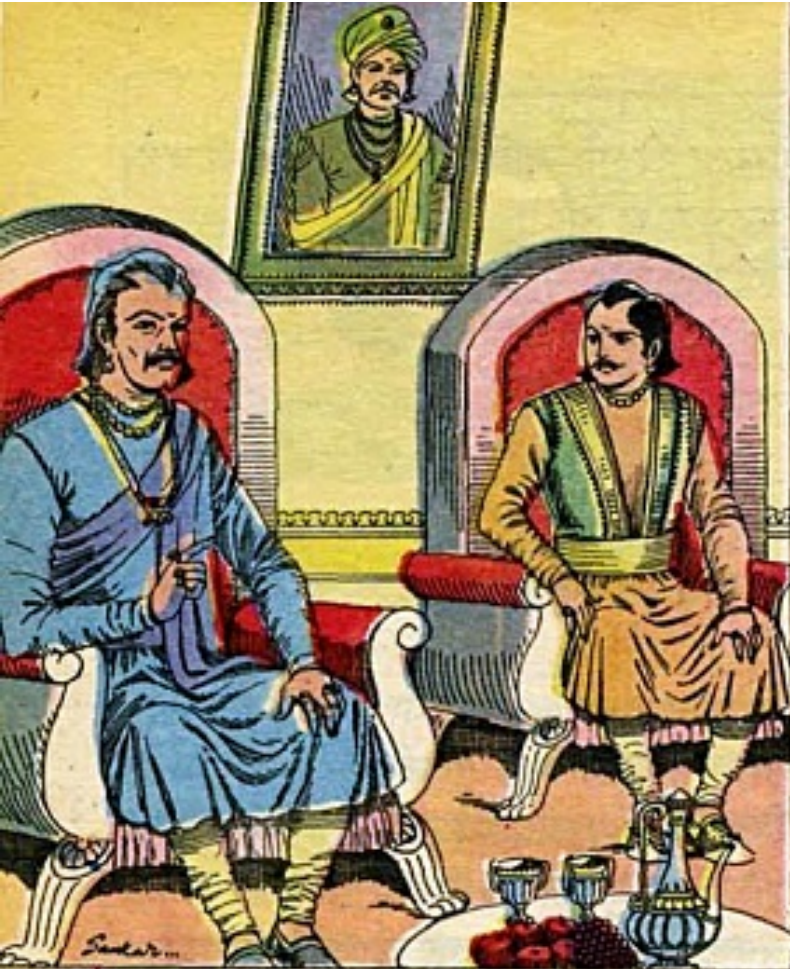
आप लोग समुचित रूप से अपना काम तो कर रहे हैं ना?"

उन चारों ने बड़े विनय से प्रत्युत्तर दिया "सब ठीक-ठाक चल रहा है। ज़मींदारी संबंधी काम-काज रोज़ ब रोज़ बढ़ते जा रहे हैं। अच्छा होगा कि कुछ और नौकर नियुक्त किये जाएँ।"

छत्रपुर में नरेंद्र का चाचा था। उसकी सौ एकड़ की ज़मीन थी। खेती बहुत अच्छी तरह करवाता था और बड़े ही सुख-चैन से रहता था। उसका नाम चतुर था। जैसा नाम था, बैसा ही उसका व्यवहार भी था। सब से घुल मिलकर रहता और अपने मज़ाकों से लोगों को खूब हँसाता था। नरेंद्र ने सोचा कि कुछ दिन चाचा के पास रहूँगा तो मन को सुकून मिलेगा।

चतुर ने नरेंद्र का स्वागत बड़े प्रेम से किया। कुशल-मंगल पूछा। ज़मींदार नरेंद्र ने अपनी कठिनाइयाँ बतायीं। कहा "लगता है, मेरी समस्याएँ हल नहीं होगीं। ज़मींदारी छोड़कर आपकी तरह खेती करूँ तो शायद अच्छा होगा। सुख-चैन से रह सकूँगा। समस्याओं से भी मुक्त रहूँगा।"

इसपर चतुर हँसा और बोला "खेती करना भी कोई आसान काम नहीं है। मेरा बेटा प्रताप हर समस्या का परिष्कार ढूँढ़ पाता है, मुश्किल को आसान कर देता है, इसीलिए मेरा भी काम सुगम हो गया है। अथवा मालूम नहीं, मुझपर क्या बीतता।"

नरेंद्र अपने चाचा की बातों पर आश्चर्य प्रकट करता हुआ बोला "तो प्रताप को आप मेरे साथ भेजिये। कोशिश करके देखता हूँ कि क्या वह मेरे मसलों का हल ढूँढ़ पाता है कि नहीं।"

"मुझे प्रताप पर पूरा विश्वास है। वह अवश्य ही अपने काम में सफल होगा। परंतु तुम्हारे साथ भेजना मुझे पसंद नहीं। क्योंकि उसमें बहुत ही अहंकार है। इन सौ एकड़ों की खेती क्या करा रहा है, वह समझ रहा है कि आसमान को भूमि पर ला खड़ा कर दिया। उसकी आँखें सर पर चढ़ गयी हैं। अगर तुम्हारे यहाँ आकर वहाँ की समस्याओं को सुलझा दिया तो बस उसे काबू में रखना किसी के बस की बात नहीं होगी। उसके अहंकार को सहना मुझसे नहीं होगा। उसके

इस अहंकार को दूर करने की मैने बहुत कोशिश की, लेकिन नाकामयाब रहा ।

तब नरेंद्र हँसता हुआ बोला "आपकी समस्या छोटी है परंतु मेरी समस्या बड़ी है । प्रताप मेरी समस्या को सुलझा पायेगा तो आपकी समस्या को सुलझाना मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं होगा ।"

"पहला कार्य सफल होगा और दूसरा नहीं, यह मेरा अभिप्राय है" कहते हुए चतुर ने प्रताप को नरेंद्र के साथ भेजने की सम्मति दी ।

फिर उसने नरेंद्र से कहा "तुम प्रताप से बताओ कि मेरी समस्या सुलझानेवाला संसार में कोई है ही नहीं, इसलिए तुम्हारी सहायता माँग रहा हूँ । और यह भी उससे बताओ कि दुनिया में सब लोग तुम्हारी योग्यता की वाहवाही कर रहे हैं । तभी वह तुम्हारे साथ आयेगा ।"

शाम को प्रताप खेत से लौटा । नरेंद्र उससे मिला और चाचा के कहे मुताबिक़ उससे बातें की । प्रताप अपनी प्रशंसा सुनकर फूले ना समाया । नरेंद्र की समस्या के बारे में उसने पूरी जानकारी प्राप्त की और बोला "इस अल्प काम के लिए मैं तुम्हारे साथ आऊँ? एक उपाय सुनो । उसे अमल में लाओ । दो महीनों में नतीजा नहीं निकला तो मुझसे पूछना ।"

प्रताप के बताये हुए उपाय को ध्यानपूर्वक सुनकर नरेंद्र रामपुर लौटा । उसने अपने चारों प्रधान कर्मचारियों को बुलाया और कहा "मेरे पिता के ज़माने से आप यहाँ काम कर रहे हैं । आपको अपने ही परिवार का

क्या-क्या काम सौंपे जा रहे हैं । कर्मचारी को भी आपको लिखकर देना होगा कि वह क्या-क्या काम कर रहा है । हफ़्ते भर के लिए जो काम उसे करना है, अगर उसने नहीं किया तो आप उसे सावधान कर सकते हैं, उसे चेतावनी दे सकते हैं । इससे छोटे कर्मचारी आपकी अच्छाई का नाजायज़ फ़ायदा भी उठा नहीं पायेंगे ।"

चारों ने नरेंद्र की सारी बातें स्वीकार कीं । नरेंद्र ने तब कहा "एक और बात । आपकी अच्छाई देखकर कर्मचारी आपका ग़लत अंदाज़ा भी लगा सकते हैं । आपको तो मालूम होना चाहिये कि कर्मचारी क्या काम करते रहते हैं । इसके लिए आप उनके दर्ज किये गये कामों के कागज़ पर दस्तख़त कीजिये । इससे वे आपसे ड़रेंगे भी । कागज़ पर आपका दस्तख़त ना हो तो इसका मतलब है कि उन्होने काम नहीं किया ।"

प्रधान कर्मचारियों का उत्साह दुगुना हो गया । नरेंद्र थोड़ी देर रुका और फिर बोला "एक बात और । जो ज़्यादा काम करते हैं, उन्हें वेतन भी ज़्यादा मिलेगा । जो कम काम करते हैं, उन्हें वेतन कम मिलेगा । पर आपका निर्णय अंतिम निर्णय होगा ।" चारों ने ज़मींदार की अक़्ल की भरपूर तारीफ़ की ।

नरेंद्र ने कहा "आप जैसे लोगों को कोई भी धोखा दे सकते हैं । बिना काम किये ही आपको दस्तख़त करने के लिए कहेंगे । चूँकि आप सब एक दूसरे से हर रोज़ मिलते

अंग मानकर आपका आदर-सत्कार कर रहा हूँ । ज़मींदारी के काम-काजों के लिए धन पर्याप्त नहीं हो रहा है । आप सब मुझे अपना सहयोग देंगे तो अपनी आमदनी बढ़ा सकते हैं । इसके लिए ज़रूरत पड़े तो आपके अधीन कुछ और कर्मचारियों को नियुक्त करूँगा । अगर आप ज़रूरत नहीं समझते हों तो अब जो कर्मचारी हैं, उनमे से कुछ लोगों को घटा भी सकते हैं ।"

चारों ने ज़मींदार को आश्वासन दिया कि वे अवश्य ही इस काम में ज़मींदार को अपना पूरा सहयोग देंगे, लेकिन उन्होने और कुछ कर्मचारियों की नियुक्ति की भी मांग की ।

तब नरेंद्र ने कहा "तो एक काम कीजिये । कागज़ पर लिखिये कि हर कर्मचारी को

रहते हैं, इसलिए कभी-कभी मज़बूरन दस्तखत भी करना पड़ेगा। इसलिए दस्तख़त हो जाने पर,वे कागज़ मेरे पास भी भेजिये। मैं भी परीक्षा करूँगा कि वे ठीक तरह से काम करते हैं या नहीं। कागज़ पर लिखा हुआ काम अगर सचमुच नहीं हुआ हो तो उनको तीन प्रकार की सज़ाएँ दी जाएँगी। पहला काम ना करने के अपराध में, दूसरा ग़लत बयान देने के अपराध में, तीसरा आपको बहकाने के अपराध में।"

यह सुनकर प्रधान कर्मचारियों के चेहरों का रंग उड़ गया। वे कुछ भी बोल नहीं पाये। नरेंद्र ने फिर कहा "कर्मचारियों का काम ठीक ना हो तो वे काम से निकाले जा सकते हैं। इस का निर्णय भी आप ही के हाथ में है। इस संबंध में आप ही के पूरे अधिकार होंगे।"

अब प्रधान कर्मचारियों को असली रहस्य ज्ञात हो गया। नये लोगों को काम पर लगाना हो, पुराने लोगों को निकालना हो, अच्छी तरह से काम करनेवालों को वेतन अधिक देना हो, तो सब कुछ उनके किये गये कामों पर ही निर्भर होगा। उन लोगों को अब मालूम हो गया कि काम का हिसाब लगाने के लिए ज़मींदार ने अच्छी पद्धति चुनी है। आज तक इस पद्धति के अभाव में वे जो करते रहे, करते रहे। अब आगे से उनके खेल बंद।

महीने के अंदर, पुराने कर्मचारियों ने ही पहले से भी अधिकाधिक काम कर दिखाया। प्रधान कर्मचारियों ने अपने निजी कामों को करने के लिए दूसरा प्रबंध कर लिया। क्योंकि छोटे कर्मचारियों को काम के आधार पर ही प्रतिफल मिलने लगा, ना कि प्रधान कर्मचारियों की सिफ़ारिश के आधार पर। भला अब वे क्यों कर प्रधानों के कामों में लगे रहेंगे?

नरेंद्र ने प्रताप की इस योजना को सफल देखा। वह बहुत ही खुश हुआ और छत्रपुर जाकर चतुर से मिला। उसने चाचा से कहा "हमारे प्रताप की प्रतिभा असाधारण है। उसे मेरे पास भेजिये। मेरा दीवान बनकर मेरी ज़मींदारी सक्षम रूप से संभालेगा।"

चतुर हँसकर बोला "पहले ही मैं तुमसे कह चुका हूँ कि वह आवश्यकता से अधिक अहंकारी है। अब तो उसकी नज़र में तुम कुछ भी नहीं हो। उसका व्यवहार तुमसे
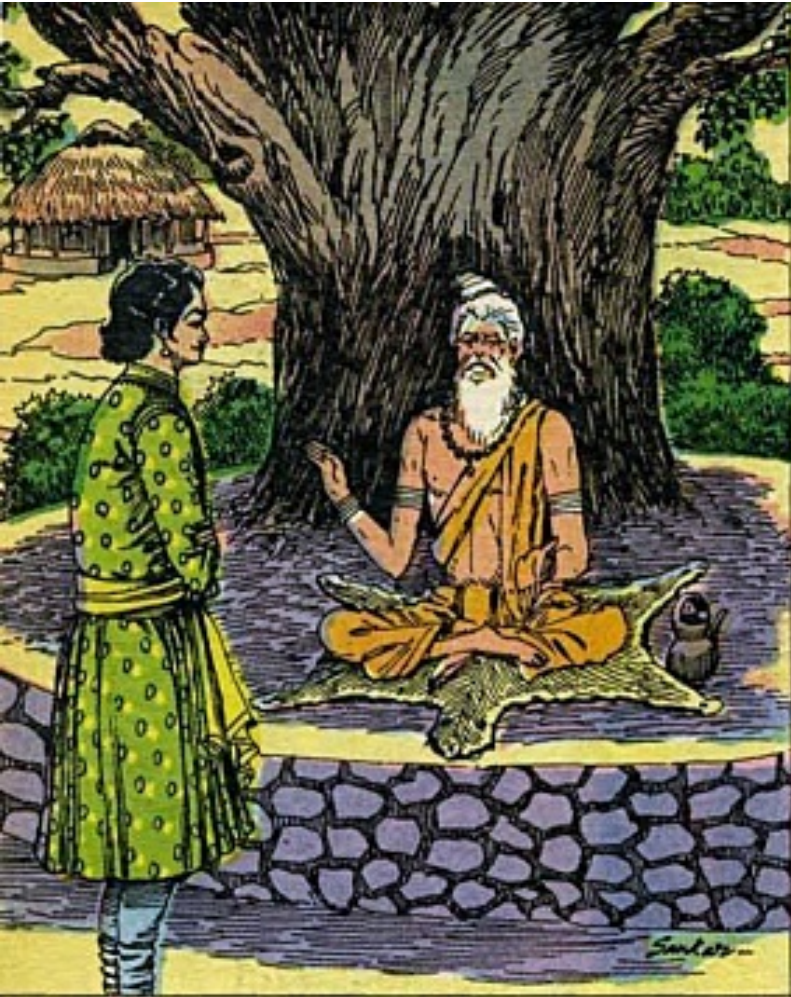
सहा नहीं जायेगा।"

"मुझे अच्छी तरह याद है, आपने जो कुछ भी कहा। उसका अहंकार कम करने के लिए मैंने उपाय भी सोच रखा है। शबरी वन में प्रवीण नामक एक योगी हैं। वे बहुत बड़े ज्ञानी हैं। हमारा प्रताप क्या, संसार का बड़े से बड़ा बुद्धिमान भी उनके सामने नहीं के बराबर है। उनका कोई सानी नहीं रखता। वे किसी से भी बात ही नही करते। उन्होने मुझसे कहा था कि मेरी सुरक्षा ऐसी करो, जिससे कोई भी मेरे पास आ नहीं पाये। हमारा प्रताप एक सप्ताह वहाँ उनके संग रहेगा तो उसकी ज्ञानाभिवृद्धि होगी। उसका अहंकार आप ही आप मिट जायेगा।" नरेंद्र ने कहा।

"उस प्रवीण से मिलने के लिए प्रताप को मनाने का भार तुम पर है। उसमें परिवर्तन आ जाए तो मुझसे ज़्यादा खुशी किसे होगी?" चतुर ने कहा।

रात को प्रताप जब खेत से लौटा तो नरेंद्र ने प्रवीण के बारे में सब कुछ सुनाया और कहा "जो योगी होता है, उसे तो चाहिये कि अपना ज्ञान दूसरों में बाँटे। प्रवीण को तरह अहंकारी नहीं होना चाहिये। तुम्हें उनसे मिलने का मौक़ा दे रहा हूँ। तुम्हें उन्हें इस योग्य बनाना चाहिये कि वे अपना ज्ञान दूसरों में बाँटें। और यह काम केवल तुम्हीं से संभव हो सकता है।"

दूसरे दिन प्रताप प्रवीण से मिला। उन्हें समझाने का प्रयत्न किया तो प्रवीण ने उसे डाँटते हुए कहा "मुझे समझाने के लिए तुम जानते ही क्या हो? मैने जिन-जिन शास्त्रों का अध्ययन किया, सुनो, एक एक करके बताता हूँ। मेरा कहा सुनो और सोचो कि मुझे समझाने की योग्यता तुममें है या नहीं।" चार दिन तक प्रवीण ने प्रताप को भिन्न-भिन्न शास्त्रों का सार बताया।

प्रताप को अब तक मालूम नहीं था कि शास्त्र इतने प्रकार के होते हैं। वह पहले आश्चर्य में डूब तो गया, लेकिन अपने को संभालते हुए उसने कहा "आपने इतने शास्त्रों का गहरा अध्ययन किया है, लेकिन क्या लाभ? उन्हें एक साधारण व्यक्ति को समझाने की शक्ति आपमें नहीं है। आपकी तरह शास्त्रों का ज्ञान मुझे नहीं है। पर,

मैने बहुत-से ऐसे काम किये हैं, जो साधारण व्यक्ति के लिए लाभदायक हैं, उपयोगी हैं। उन्हें मैं अच्छे उपाय भी बता सकता हूँ।" उसने अपने किये गये कामों का पूरा ब्योरा दिया। इनमें नरेंद्र को बताया हुआ उपाय भी सम्मिलित है।

प्रवीण ने पूरा सुनने के बाद कहा "तुम्हारे मुँखमंडल पर व्याप्त तेजस्विता को देखकर ही मैं भाँप गया कि तुम महान हो। समाज को तुम्हारे जैसे लोगों की ही आवश्यकता है। मुझ जैसे व्यक्ति की आवश्यकता नहीं। तुम सदा की तरह समाज में रहो और समाज का भला करो।"

प्रताप ने लौटकर नरेंद्र तथा अपने पिता को सब कुछ बताया। उन्हें ड़र हुआ कि प्रवीण जैसे ज्ञानी से उत्तम कहलाने के बाद उसका अहंकार और अधिक हो जायेगा और अब उसे काबू मे रखना मुशिकल हो जायेगा। लेकिन प्रताप ने उस दिन से बड़प्पन की बातें करना छोड़ दिया। जो पूछते, माँगते, उन्हें उचित सलाहें देता। लोग कहने लगे कि प्रताप जैसा विनयी कोई है ही नहीं। केवल प्रताप का पिता ही समझ पाया कि उसमें ऐसा परिवर्तन क्यों हुआ है? वह यों है: इसमें कोई संदेह नहीं कि प्रवीण महाज्ञानी है। उसने प्रताप की प्रशंसा की और जनता के बीच में आने से अपने को बचाया। ज्ञानी, लोगों को सलाहें देकर नाम कमाने की इच्छा नहीं रखते। यह रहस्य प्रताप जान गया और यह भी जान गया कि मैं ज्ञानी नहीं हूँ। अपने लक्ष्य की सिद्धि प्रताप की आदत है। उसने सोचा कि प्रवीण को लोगों के बीच ले आऊँगा। पर, यह संभव नहीं हो पाया। उसे ज्ञात हो गया कि मुझसे जो ज़्यादा अक़्लमंद है उनके पास मेरी दाल नहीं गल सकती। प्रवीण ने उसकी अधिक ही प्रशंसा कर दी और अपने इस विनय से उसपर विजय पायी। प्रताप को अब नयी बात मालूम हो गयी। वह थी, दूसरे को अविनय से नहीं बल्कि विनय से हराकर झुकाया जा सकता है। इस सत्य को जानने के बाद कोई अहंकारी बनकर रह नहीं सकता।

पवित्र कर्तव्य

बहुत पहले एक भक्त रहा करता था। यात्रा करने की उसकी तीव्र इच्छा थी। लेकिन उसका घर से निकलना कठिन हो गया था। वृद्ध माता-पिता उसी के आधार पर जीवित थे। उसे लगा कि क्षण भर के लिए भी उनको छोड़कर जाना उसके लिए असाध्य कार्य है।

अपनी इस स्थिति पर भक्त को बड़ा ही दुख होता था; उसके मन को क्षोभ पहुँचता था। वह सोचता "इन बूढ़ों को छोड़कर भला मैं कैसे यात्रा पर जा पाऊँगा? अपने मन की इच्छा पूरी कैसे कर पाऊँगा? मुझे मोक्ष कैसे प्राप्त होगा?" इस स्थिति में एक अच्छा मौक़ा उसके हाथ आया। उसका एक रिश्तेदार उसके पास आया और बोला "पुत्र, तुम यात्रा पर जाओ। तुम्हारे लौटते तक मैं तुम्हारे माँ-बाप की देखभाल करूँगा।"

भक्त के मन की इच्छा अब पूरी हुई। वह यात्रा पर निकल पड़ा। उसने एक जंगल में प्रवेश किया। वहाँ सुनने में आया कि उस जंगल में कुक्कुट नामक एक मुनि हैं, और उनके दर्शनार्थ हज़ारों लोग उस जंगल में आया करते हैं।

उस मुनि का दर्शन करने बड़े उत्साह से वह उनके आश्रम में गया। आश्रम में जाने के पहले उसने सोचा कि वे मुनिवर तपस्या में लीन होंगे। लेकिन जब वहाँ पहुँचा तो यह देखकर वह आश्चर्य में डूब गया कि वे मुनि तपस्या ही नहीं कर रहे थे। एक साधारण गृहस्थी की तरह अपना जीवन बिता रहे थे। ऐसे ही कार्यक्रमों में वे मुनि व्यस्त रहा करते थे, जैसे एक गृहस्थी रहा करता है। भक्त बड़े ही आश्चर्य से मुनि की गतिविधियों को देखता जा रहा था।

उस मुनि ने खाना पकाया। अपने वृद्ध

राज नारायण

माता-पिता को खिलाया । उनकी सुविधाओं का पूरा ख्याल रखा । यह सब समाप्त होने के बाद मुनि बाहर आये और भक्त को देखकर पूछा "पुत्र, क्या बात है? किस काम पर यहाँ आये हो?"

भक्त ने कहा "महात्मा, मैं यात्रा करते हुए यहाँ आया हूँ । आपका नाम सुनकर आपका दर्शन करने की अभिलाषा लेकर यहाँ आया हूँ । सुना है कि त्रिवेणी संगम यहाँ से समीप ही है । क्या आप बता सकते हैं कि वहाँ पहुँचने का रास्ता कौन-सा है?"

मुनि ने उत्तर दिया "पुत्र, सदा अपने वृद्ध माता-पिता की सेवा में मग्न रहता हूँ । उनको छोड़कर मैं कहीं नहीं गया और जाता भी नहीं हूँ । इसलिए त्रिवेणी संगम के रास्तेसे मैं अपरिचित हूँ ।" कहते हुए वे अंदर चले गये ।

उनके इस उत्तर से भक्त निराश हुआ । उसमें उनके प्रति जो आदर की भावना थी, वह भी जाती रही । उसे लगा कि ये कोई तपस्वी नहीं, बल्कि एक साधारण गृहस्थी हैं, जो अपने मातापिता की सेवा में रत हैं । वह यह सोचता हुआ वहीं खड़ा हो गया कि लोग आखिर इनकी इतनी प्रशंसा क्यों करते हैं? इनमें तो ऐसी कोई महत्ता नहीं, जो लोगों को इतनी आकर्षित कर रही है ।

इतने में, वहाँ तीन स्त्रीयाँ आयीं और आश्रम के अंदर गयीं । उन तीनों के चेहरे देखने में बुहत भद्दे और गंदे लग रहे थे । उन्हें देखकर भक्त में जिज्ञासा और जागृत हो उठी और वहीं रहकर प्रतीक्षा करने लगा कि देखें, होता क्या है?
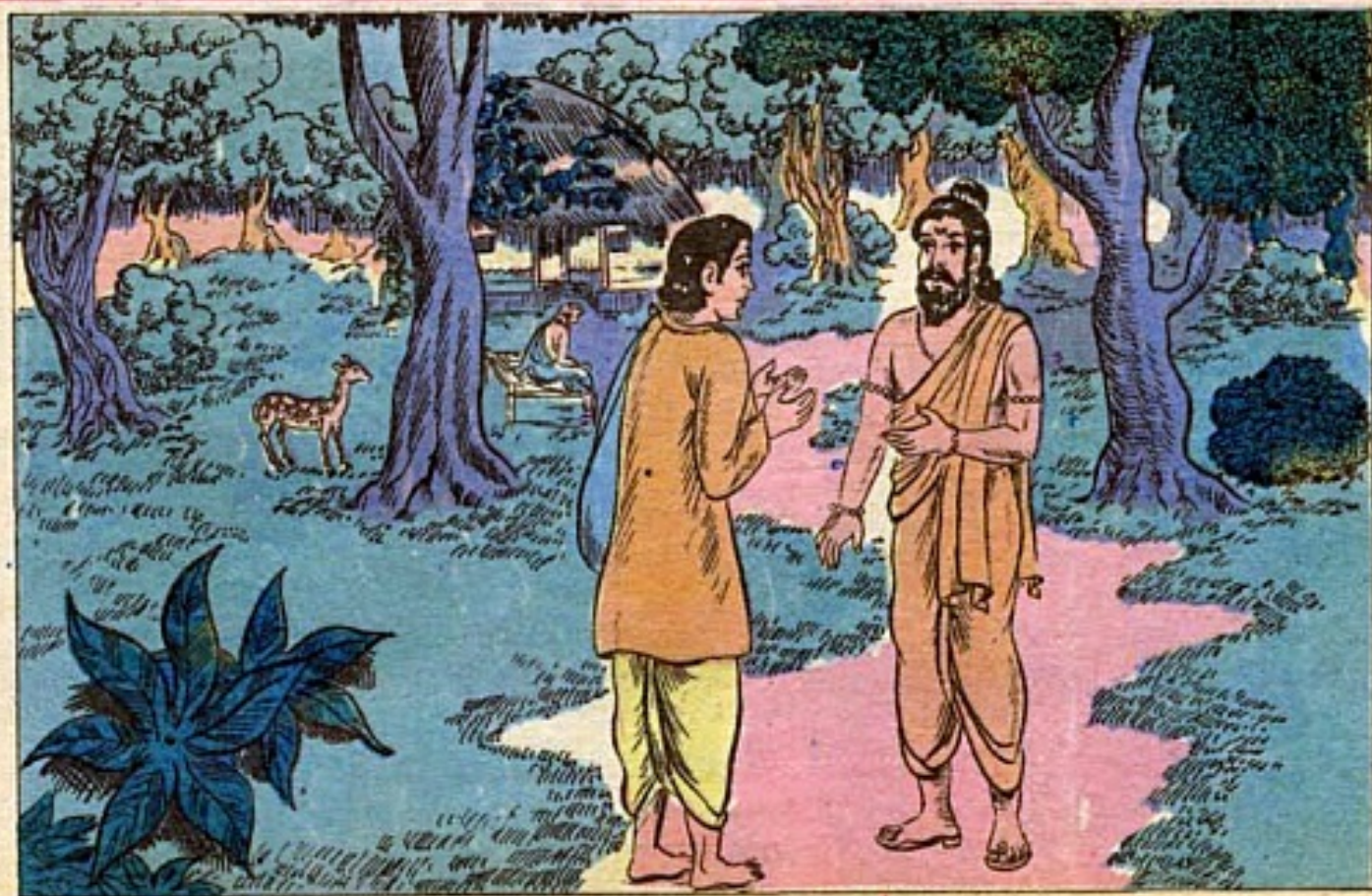
थोड़ी ही देर में उसने देखा कि वे तीनों स्त्रीयाँ अप्सराओं के रूप में आश्रम से बाहर आयीं । भक्त के आश्चर्य का अंत ना रहा । उन अपूर्व सुंदरियों को देखकर पूछे बिना उससे रहा नहीं गया ।उसने उनसे पूछा" देवियो, आप कौन हैं? आपका यहाँ क्या काम?"

तब उन सुंदरियों ने कहा "हम तीनों बहनें हैं । इस लोक में हमें गंगा, यमुना और सरस्वती कहकर पुकारते हैं । प्रयाग के पास हम तीनों मिलकर नदियों के रूप में प्रवाहित होती रहती हैं । अपने पापों को धोने के लिए लोग बड़ी ही श्रद्धा से यहाँ आते हैं और हममें स्नान करते हैं । हममें स्नान करनेवाले तरह-तरह के पाप करके यहाँ आते हैं । कुछ ऐसे हैं, जो अपने माँ-बाप की उपेक्षा करते हैं, उनका अनादर करते हैं और कुछ ऐसे हैं, जिनके पाप क्षम्य ही नहीं । इन पापियों के कारण हमारे रूप बहुत ही घिनौने हो जाते हैं । तुमने इसके पहले हमारे जो घिनौने रूप देखे, उन्हीं पापियों के पापों का परिणाम है ।"

भक्त उनकी बातें सुनकर चकित रह गया । उन्होने कहा "अपने इन घिनौने रूपों को मिटाने और अपने निजी रूप पाने के लिए हम इस आश्रम में आया करती हैं ।इस महात्मा के दर्शन से हमारे सारे पाप धुल जाते हैं । इस महात्मा के आशीर्वाद के बल पर ही अपनी पवित्रता की रक्षा करती आ रही हैं ।" कहकर वे अदृश्य हो गयीं ।

उनकी बातों से भक्त के मन में महान परिवर्तन हुआ । बहुत ही दीर्घ अवधि से उसके मन में यात्रा करने की जो प्रबल इच्छा थी, तक्षण ही नष्ट हो गयी । बिना कुछ सोचे-बिचारे वह सीधे घर पहुँचा । उस दिन से वह अपने माता-पिता को ही प्रत्यक्ष दैव मानने लगा और भक्तिपूर्वक उन्हीं की सेवा में लगा रहा ।

(पच्चीस साल पहले 'चंदामामा' में प्रकाशित कहानी)

प्रकृति-रूप अनेक

बिना पानी के जीनेवाले जंतु

ऊँट को रेगिस्तान का जहाज़ कहते हैं। जहाज़ पानी पर जाता है तो ऊँट बिना पानी पिये कितने ही दिन रेगिस्तान में सफ़र करता है। ऊँट की ऊँची झुकी हुई पीठ में चर्बी के पदार्थ अधिक भाग में जमे हुए होते हैं। चर्बी के वे पदार्थ उसके शरीर को पर्याप्त शक्ति देते हैं। ऊँट को अधिक पसीना नहीं लगता। इसलिए शरीर का पानी जैसे के तैसे जमा रहता है। लेकिन जैसे ही इसे पानी दिखायी देता है, यह एक ही दम २५ गालन पानी पी जाता है। साधारणतया यह सूखी घास और नागफनी खाता है।
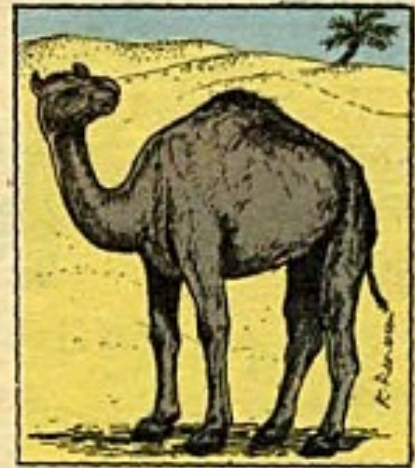
पंखों को सहलानेवाले पक्षी

पक्षियों के शरीर से जो पंख निकाले जाते हैं, उन्हें पानी में भिगोया जाए तो उसके बाल निकल आते हैं। लेकिन जब वे बाल पंख पर होते हैं, तब वे भीग भी जाएँ तो वे नहीं निकलते। इसका कारण है, पक्षियों के शरीर में पायी जानेवाली तेल-ग्रंथियाँ। क़रीबन सब पक्षियों की पूँछों के अंतिम भाग पर तेल की ग्रंथियाँ होती हैं। पक्षी जब अपनी नाक से सहलाता है, तब इस ग्रंथि से एक प्रकार का

तेल बहता है और यह पंखों तक पहुँचता है। पक्षी जब वर्षा में आकाश में उड़ने लगते हैं तब पंखों को भीगने नहीं देते। वे इस प्रयत्न में रहते हैं कि पानी की बूँदें फिसल जाएँ। इसीलिए पक्षी अधिकतर अपनी नाक से पंखों को सहलाते रहते हैं। पक्षी जब इस प्रकार से अपने पंखों को सहलाते हैं तब थोड़ा-सा तेल का पदार्थ इनके मुँहों के अंदर चला जाता है। इससे डी. विटमिन शक्ति का उत्पादन होता है।

दीर्घायु

मोरीषियस नामक कुछुआ १५० साल तक जीवित है। उसे जिन्होने देखा, उनका कहना है कि वह दो सौ सालों तक भी जीवित रहेगा। अमेरिका में करोलिना नामक एक जीवित कछुवे की उम्र १२३ साल है। जंतुओं में हाथी ६०-७० साल तक जीवित रहता है। पानी का हाथी, गैंडा चालीस साल, रीछ ३०-३२ साल तक जीवित रहते हैं। कुछ घोड़े तो पचास साल तक जीवित रहते हैं। कुत्ते की उम्र बाईस साल है तो कुछ गरुडपक्षी, तोते पचास साल जीवित रहते हैं। मछलियों में एक प्रकार की मछली साठ साल तक ज़िन्दा रहती है। अमेरीका का ईल ५० साल तक जीवित रहता है।
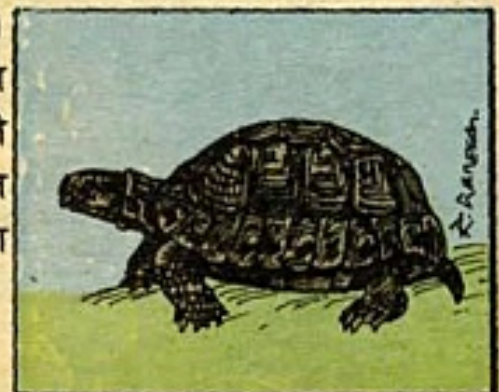
Now
Writing is a pleasure
with LION Novelty
Introducing the winning edge
NEW RANGE OF FANCY PENCILS.
Lion's Novelty Pencils have Mythologies from the Ramayan, Mahabharat and Shri Krishna Leela in colourful pictures. Making it interesting and easier for children to understand ethics.
HAPPY BIRTH DAY
Decorative pencils with Birthday Greeting messages, Rainbow colours and Alphabets are a silent language of love.
RAINBOW
Pencils with action-packed pictures of the Turtles, Hi.... Cat and Ping Pong brim 'YOUNG SMARTIES' with overpowering confidence.
TURTLES
LION PINKY PENCILS
Pinky, the charming beauty garbed in floral attire is all ready to allure every young boy and girl in town. She has claimed 'The Beauty And The Brain Pencil' title already.
PINKY
Manufactured by
LION PENCILS LTD.,
MARKETING DIVISION
95, PARIJAT, MARINE DRIVE, BOMBAY-400 002. TEL: 296856, 2089926
National-960
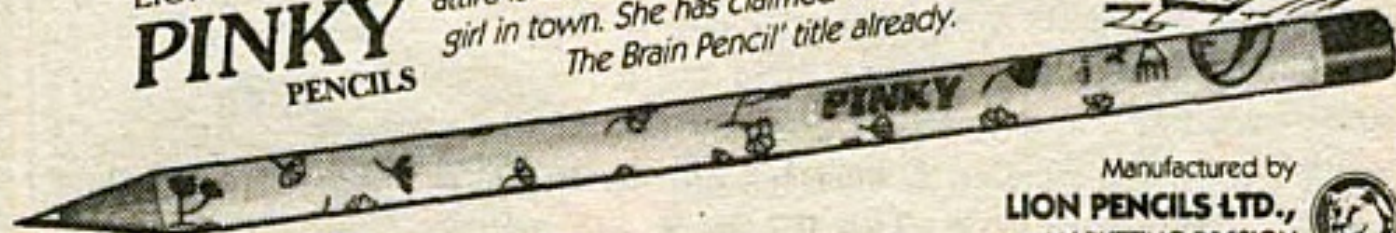
फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता :: पुरस्कार १००)

पुरस्कृत परिचयोक्तियाँ अप्रैल, १९९४ के अंक में प्रकाशित की जाएँगी ।

S.G. SESHAGIRI

S.G. SESHAGIRI

★ उपर्युक्त फोटो की सही परिचयोक्तियाँ एक शब्द या छोटे वाक्य में हों । ★१० फरवरी '९४ तक परिचयोक्तियाँ प्राप्त होनी चाहिए । ★ अत्युत्तम परिचयोक्ति को (दोनों परिचयोक्तियाँ को मिलाकर) रु. १००-/ का पुरस्कार दिया जाएगा । ★ दोनों परिचयोक्तियाँ केवल कार्ड पर लिखकर इस पते पर भेजें : चन्दामामा फोटो परिचयोक्ति प्रतियोगिता, मद्रास-२६.

[illegible] की प्रतियोगिता के परिणाम

पहला फोटो : परिश्रम से जीवन महान!

दूसरा फोटो : हँसना ही जीवन का नाम!!

प्रेषक : विकास कुमार खुराना H. No B/34, GOPALNAGAR (NUMAISH CAMP) SAHARANPUR 247001, UTTAR PRADESH

चन्दामामा

भारत में वार्षिक चन्दा : रु ४८/-

चन्दा भेजने का पता :
डाल्टन एजन्सीज़, चन्दामामा बिल्डिंग्ज़, वडपलनी,
मद्रास-६०० ०२६

Printed by B.V. REDDI at Prasad Process Private Ltd., 188 N.S.K. Salai, Madras 600 026 (India) and Published by B. VISWANATHA REDDI on behalf of CHANDAMAMA PUBLICATIONS, Chandamama Buildings, Vadapalani, Madras 600 026 (India). Controlling Editor: NAGI REDDI.

Go ahead
Try-Me!
I remember the day we moved into our new home. The boys and girls on the block looked like they were having `hazaar' fun. But no, they didn't look too interested in me.
How do you walk up to a new gang and make them your pals? Think...Think. So I just chuck a Try-Me in my mouth...walk my best tough-guy-walk and offer them a handful of Try-Me - "Go ahead, Try Me!" Yeah. I made five new best pals that day.
Parry's
Try-Me!
Parry's
Try-Me!
The Bold New Taste
HTA-8507

CHANDAMAMA (Hindi) February 1994 Regd. No. M. 5452